युगवाणी

(सप्तम् अंक)

शेरवानी इण्टर कॉलेज न्योली, कासगंज

सत्र – 2013–1014

संरक्षक एवं प्रधानाचार्य

श्री मशकूर हसन एम. ए. , बी. एड.

प्रधान सम्पादक

श्री नरेंन्द्र सिंह (प्रवक्ता भौतिकी)

सम्पादक मण्डल

श्री नीरज कुमार यादव (प्रवक्ता)

श्री राम शंकर विरले (स. अ.)

श्री मनोज कुमार शर्मा (प्रवक्ता)

श्री कुन्दन सिंह (स. अ.)

सरस्वती वंदना

हे मॉ वीणा पाणि, विश्व परित्राणी।

सर्व कल्याणी रचे 'युगवाणी'

वह शुद्ध–बुद्धि वर दें।

अज्ञान–अन्धकार विरूद्ध माँ विमला

तू विमल–ज्योति। युग–जीवन तुच्छ–तमतर

हम दिग्भ्रमित जगति–प्राणि

कण–कण कंचन कर, भव–भ्रम हर दें।

हम दल–दल के उत्पल

अपनी नाल पर कम्पित मुकुल

भर सौरभ बन ध्वल, देवि आसन

फैले कीर्ति अमल अरघानी

ऐसा सुन्दर सरोवर दें।

हे मॉ वीणा पाणि–विश्व परित्राणी।

सर्व कल्याणी रचे युगवाणी

वह संकल्प–शुद्धि कर दें।

नीरज कुमार यादव

शुभ सन्देश

प्रिय श्री,

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि शेरवानी इ. का. न्योली अपनी विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'युगवाणी' का प्रकाशन करने जा रहा है। मैं सम्पादक मंडल को पूरे मन से शुभ कामना देता हूँ कि स्मारिका का यह अंक संग्रहणीय बने और जन मानस में अपनी उत्कृष्ट छाप छोड़ने में सफल रहे। मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि यह स्मारिका छात्र–छात्राओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

सलीम इकबाल शेरवानी

पूर्व सांसद एवं विदेश मंत्री

भारत सरकार नई दिल्ली

शुभ सन्देश

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शेरवानी इ. का. न्योली अपनी कालेज पत्रिका 'युगवाणी' का प्रकाशन करने जा रहा है।

विद्यालय पत्रिका छात्रों लेखकों/कवियों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होता है। जिसके माध्यम से छात्र–छात्रायें अपनी मौलिक रचनायें समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

''युगवाणी'' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

डॉ० कुँ० देबेन्द्र सिंह यादव

पूर्व सांसद

एटा लोक सभा

शुभ सन्देश

प्रिय महोदय,

परम परितोष का विषय है कि शेरवानी इ. का. न्योली प्रतिवर्ष उत्कृष्ट सफलता का परचम फहराता हुआ शैक्षणिक–जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सफल हुआ है, इसी दिशा में विद्यालयी वार्षिक पत्रिका प्रतयक्ष प्रमाण है, में इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ और कामना करता हूँ कि स्मारिका का यह अंक विशेष रूप से पठनीय एवं संग्रहणीय बने।

विद्यालय पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

डॉ० आर० पी० वर्मा

जिला विद्यालय निरीक्षक

कासगंज

शुभ सन्देश

प्रिय महोदय,

मुझे यह जानकर अतीव प्रफुल्लता हो रही है कि शेरवानी इ. का. न्योली अपनी पत्रिका ''युगवाणी'' का सप्तम् अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

विद्यालय पत्रिका छात्र/छात्राओं की अंकुरित साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। जिसके माध्यम से वे अपनी मौलिक रचनाओं के द्वारा समाज को आन्दोलित करने का प्रयास करते हैं।

विद्यालय पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी मंगल शुभकामनायें।

जय पाल सिंह यादव

अध्यक्ष

प्रधानाचार्य परिषद, कासगंज

सम्पादकीय

'युगवाणी' के सप्तम् अंक को लोकार्पित करते हुए, हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति भाव, विचार शैली और आचरण की दृष्टि से अद्वितीय और निर्विकल्प होता है। उसकी अभिव्यक्ति की विधा, विचार, भाषा और शैली सबमें यह विशेषता दिखेगी। इस दृष्टि से जो रचनाएँ प्रस्तुत हुई वे मन को तोष देती हैं। यद्यपि जैसा कि पूर्व में भी कहा जाता रहा है कि इनकी मौलिकता का परीक्षण कठिन है अतः सम्पादक मण्डल मूल रचनाकारों से क्षमा ही मांग सकता है।

विद्यालय भावी नागरिको का निर्माण करता है। अतः इस देश काल की चुनौतियों को समझना अति आवश्यक है। हमने यह निर्णय लिया है कि राष्ट्रीय समस्याओं पर लिखा जाये, लेकिन समस्यायें इतनी अधिक हैं कि मुक्तिबोध की यह पंक्ति याद आ गयी।

''आज के लेखक की दिक्कत यह नहीं है कि कमी है विषयों की/बल्कि विषयों की अधिकता उसे बहुत सताती है।

लेकिन मौन रहने से कुछ कहना अच्छा है हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है विचार और व्यवहार में बहुत बड़ा अन्तर। कुछ उदाहरण देखे हम नारी को पूज्य और श्रद्धा का आधार मानते हैं लेकिन कन्या–भ्रूण हत्या, लिंग भेद और यौन हिंसा भी हमारे समाज में व्याप्त है। अद्वेत दर्शन भारत का प्राण दर्शन है लेकिन सामाजिक भेदभाव चर्म पर है। ''सत्यमेव जयते'' के महावाक्य के नीचे बैठे मंत्री–अधिकारी ''भ्रष्टमेव जयते'' की नीति पर कार्य करते हैं। दरअसल हम मध्य युग की छाया से नहीं निकल पाये हैं। आधुनिकता को हमने शैली के स्तर पर ग्रहण किया लेकिन वैचारिक आधुनिकता से हम बहुत दूर हैं। मध्ययुग आस्था का युग था जबकि आधुनिकता में तर्क प्रधान है। इससे यह भ्रम ना पाले कि हम अनास्था का प्रचार कर रहे हैं क्योंकि आस्था का विलोम अनास्था होगा तर्क नहीं तर्क से तर्कहीनता समाप्त होगी और उससे प्राप्त आास्था वैज्ञानिक और समसामायिक होगी नीत्से ने कहा है कि ''आस्था क्या है सत्य को न जानने की इच्छा।'' जबकि सहज रूप से सत्य जानने की इच्छा हर मनुष्य का मूल धर्म है। इस सन्दर्भ में कवि कुँवर नारायण की ये पंक्तियाँ याद आ रही हैं कि ''मैं अपनी नास्तिकता में अधिक धार्मिक हूँ'' निःसंदेह धर्म के लिए ईश्वर के अस्तित्व को मानना उतना आवश्यक नहीं है जितना कि हर मनुष्य का दूसरे मनुष्य को मनुष्य मानना और स्वयं के मनुष्य को बचाये रखना।

मानवीय विश्व और भारत के निर्माण में लगे कुछ विभूतियों को हमने इस सत्र में खोया है जैसे नेल्सन मंडेला, नरेन्द्र दाभोलकर, राजेन्द्र यादव। नेल्सन मंडेला परिचय के मोहताज नहीं उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में व्याप्त रंगभेद के विरोध में संघर्ष करते हुए अपना जीवन व्यतीत किया अपना आधा जीवन जेल में व्यतीत किया लेकिन रंगभेद को समूल रूप से नष्ट कर दिया।

नरेन्द्र दाभोलकर अन्धविश्वास के विरूद्ध जन आन्दोलन चलाने वाले समाज सेवी थे। 20 अगस्त 2013 को उनकी निर्मम हत्या कर दी गयी। राजेन्द्र यादव नयी कहानी आंदोलन के चार स्तम्भों में से एक थे उन्होंने मुंशी प्रेमचन्द की पत्रिका हंस को पुनः प्रकाशित ही नहीं कराया बल्कि दलित और स्त्रीलेखन से जुड़े उनके स्वप्न को पूर्ण किया। इन तीनों विभूतियों ने समाज को नया मार्ग दिखाया। हमारा परिवार इन्हें श्रद्धाजंलि देते हुए, इनके राजनैतिक, सामाजिक और साहित्यिक उद्देश्यों को अंगीकृत करता है।

प्रधान सम्पादक

प्रबन्धक महोदय का सन्देश

इस विद्यालय जैसे प्राचीन और उत्कृष्ट संस्था के प्रबन्धन का दायित्व ग्रहण करते हुए मुझे गर्व और जिम्मेदारी का एहसास हुआ था। उसी भावना को अक्षुण बनाये रखकर मैंने पूरी प्रतिबद्धता से संस्था के शैक्षिक सुसाधनों को संग्रहीत और संरक्षित करने का प्रयास किया है।

प्रिय विद्यार्थियों।

आज का दौर प्रतिस्पर्धा का है। आप अपने माता–पिता गुरूजनों और राष्ट्र की आकांक्षाओं का आधार है। अतः जीवन में सफलता पाने के लिए परिश्रम आवश्यक है। लेकिन आपको सफलता की अन्धी दौड़ का हिस्सा नहीं बनना है। आपको दौड़ना है? लक्ष्य को भी प्राप्त करना है लेकिन खुली आंखों के साथ। क्योंकि नैतिक विकास सबसे अधिक महत्वर्पूण है। महान वह नहीं बनता जो अपने लिए बहुत कुछ अर्जित करता है बल्कि वह बनता है जो समाज के लिए अपना सब कुछ समर्पण कर देता है। जब भी जीवन में किंकर्तव्य विमूढ़ता की स्थिति आये, उचित–अनुचित का निर्णय कठिन लगे तो उस व्यक्ति की सूरत याद करो जो आप की दृष्टि में सबसे निरीहतम है। अन्धेरा खुद व खुद छट जायेगा।

सम्माननीय अभिभावकजन।

आपकी सन्तानें आपके सपनों की सम्बल हैं। हम भी यही आशीष देते हैं कि ये आपका, हमारा और राष्ट्र का गौरव है। किन्तु यह भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि आपकी अपेक्षाओं के बोझ के नीचे इनका कोमल बचपन कुंठित तो नहीं हो रहा है। हर बच्चे की अपनी विशेष अभिरूचि और क्षमता होती है। क्षमता तो बच्चे के आत्म बल और हमारे प्रयसों से बढ़ाई जा सकती है। किन्तु अभिरूचि को बदलना जटिल है। इस प्रयास में छात्र का सम्पूर्ण व्यक्तित्व उलझकर रह जाता है। आप स्वयं सोचें कि यदि सचिन तेन्दुलकर को वैज्ञानिक और कलाम साहब को खिलाड़ी बनाने का प्रयास किया जाता तो क्या होता। क्या वे भारत रत्न बन पाते? औपचारिक शिक्षा के समानान्तर सरकार ने कौशलपरक व्यवसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम भी चला रखे हैं। इस तरफ हमें और आपको ध्यान देने की आवश्यकता है।

अध्यापक साथियों।

अध्यापक का व्यक्तित्व बौद्धिक और नैतिक दोनों रूपों में सम्पूर्ण होना चाहिए। इस दृष्टि से अध्यापक होना कठिन है। किन्तु आपके कन्धों पर राष्ट्र के भविष्य के निर्माण का भार है। अतः इस कठिन कार्य को आपको सहज बनाकर अपने व्यक्तित्व में अंगीकृत करना होगा। आप चाणक्य सर्वपल्ली राधा कृष्णन और मौलाना अबुल कलाम आजाद के उत्तराधिकारी हैं। इन बातों के प्रकाश में आपका मनोबल अवश्य बढ़ेगा।

प्रिय शिक्षणेत्तर साथियों।

जिस तरह ऊँची इमारत की बुनियाद दिखाई तो नहीं देती लेकिन उसका महत्व सभी जानते हैं। ठीक उसी प्रकार आप स्वयं शिक्षण कार्य तो नहीं करते लेकिन आप शैक्षिक कार्य कलाप की बुनियाद हैं। आपके सहयोग के बिना विद्यालय एक दिन क्या एक क्षण भी नहीं चल सकता। अतः आप अपने पद की तरफ न देखकर अपने दायित्व की ओर देखें और पूर्ण निष्ठा और मनोयोग से इसका निर्वाह करें।

अन्त में मै विद्यालय परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को उनके पूर्ण सहयोग और समर्पण के लिए धन्यवाद और साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

मेरा सपना है कि मैं इस विद्यालय को ऊँचाइयों तक ले जाऊँ आपको यह भी ध्यान रखना है कि आज का दौर अराजकता भेदभाव साम्प्रदायिकता, आतंकवाद और भ्रष्टाचार से भरा हुआ है। आपको भावी पीढ़ी को बचाकर रखना है। इसमें हम सभी समय–समय पर उनको इसकी शिक्षा देते रहते हैं। इसी सन्दर्भ में मैं ईमानदारी से पूरी कोशिश कर रहा हूँ कि इस कॉलेज को डिग्री कॉलेज में बदल दूँ।

प्रधानाचार्य महोदय का सन्देश

लार्ड मैकाले 'पाश्चात्य शिक्षा' को भारत में लाये, इसके लिए हम उनको कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। लेकिन उसका उद्देश्य क्लर्कों का निर्माण करना मात्र था। लेकिन आज आजाद भारत में जो शिक्षा नीति अंगीकृत है, उसका उद्देश्य भविष्य के लिए आदर्श और योग्य नागरिकों का निर्माण करना है। ध्यान दें, प्रत्येक बच्चा I.A.S. नहीं बन सकता और न ही सिर्फ I.A.S. अधिकारियों से देश चलता है। एक राष्ट्र के लिए आवश्यक है कि चाहे सीमा पर खड़ा जवान हो या खेतों में अन्न उगाता किसान, देश के लिए नीतियाँ बनाने वाला मंत्री या कि सफाई कर्मी, सभी अपने काम के प्रति निष्ठावान और कुशल हो।

आज आजादी के 67, वर्षों बाद भी हमारा राष्ट्र साम्प्रदायिकता, जातिवाद, आतंकवाद, नक्सलवाद और भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। शिक्षित समाज इनके समाधान के लिए सदैव चिन्ताशील रहते है। इस सन्दर्भ में मुझे रहीमदास का एक दोहा याद आ रहा है।

''एके साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।

रहिमन मूलहि सीचिबों, फूलै, फलै अधाय।।''

हमारे आज के विद्यार्थी भविष्य के नागरिक है अतः इन्हें हम राष्ट्र का मूल भी कह सकते हैं। यदि हम इन्हें विद्वान और संस्कारवान बनाकर इतना समर्थ बना लेते कि वे ''परित्राणय् साधुनाम, विनाशाय च दुष्कृताम'' के बल और विवेक को प्राप्त कर सकें। इससे हमारी सभी समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जायेंगी। अतः आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे के सकारात्मक गुणों को पहचाना जाये और उसे चरम तक पहुँचाया जाये।

विद्यालय को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने तथा अधिकाधिक सुद्वढ एवं उन्पत करने के प्रयासों में सर्वश्री सलीम इकबाल शेरवानी, सईद शेरवानी तथा प्रबन्धक महोदय श्री खुर्शीद शेरवानी सहित शिक्षा अधिकारियों, अभिभावकों सहृदय सामाजिक जनों अध्यापक बन्धुओं, शिक्षणेत्तर कर्मचारी–गण एवं प्यारे–प्यारे छात्र–छात्राओं के सहयोग के लिए मैं धन्यवाद देता हूँ। इन्हीं के सहयोग से मुझे प्रगतिशील एवं उन्नत कार्यों को करने की सोच और प्रेरणा मिली। मैं इनको सच्चे हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

शेरवानी इण्टर कॉलेज

न्योली कासगंज

न्योली एजूकेशन सोसायटी द्वारा प्रबंधित

संस्थापक– स्व० लैफ्टीनेन्ट कर्नल एम॰आर॰ शेरवानी, एम॰ पी॰

संरक्षक– श्री सलीम इकवाल शेरवानी, पूर्व विदेश राज्य मंत्री

आशीर्वाद / विदाई समारोह

सत्र – 2013–2014

प्रिय विद्यार्थियों,

हम आपको आज इस प्रांगण से भीगी पलकों के साथ विदा कर रहे हैं इसमें खुशी और गम दोनों मिले हुए हैं। हमको आपका उज्जवल भविष्य दिखाई दे रहा है। और आशा करते हैं कि आप हमारे इस सपने को पूरी मेहनत करके पूरा करेंगे, सच पूछिए तो हमने पूरी निष्ठा व प्रतिबद्वता से आपको संवारने की कोशिश की, सभी गुरूजनों ने अपने परिवार का अंश समझते हुए डांटा, प्यार किया, समझाया तथा भले–बुरे की पहचान समय पर कराई। यह प्रक्रिया आपके सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा थी।

बीते कुछ समय में ठंड के कारण आपकी पढ़ाई पर प्रभाव पड़ा इसके बावजूद हमने प्रथमिकता से आपका कोर्स पूरा कराया।

ये प्रांगण आपको बचपन से जवानी में लेकर आया इसकी खट्टी मीठी यादें आप कभी भुला न पायेंगे, आपका लड़ना, झगड़ना, शरारतें, उपलब्धियां हमें भी हर समय आपकी याद दिलाती रहेगी।

आप ही की तरह पूर्व में इस प्रांगण से विदा हुए छात्र/छात्राऐं भारत में तथा विदेशों में इस विद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। हम भी पूरी आशा करते हैं कि कुछ समय बाद आपका नाम भी इसी क्रम में लिखा जायेगा।

हमने बगीचे के माली की तरह आपकी देखभाल की कभी आपको डांटा, दंडित किया, कभी पुरूस्कृत किया, सच जानिए यह सब आपके व्यक्तित्व को निखारने की प्रक्रिया थी।

आप जानते हैं कि आज का दौर आतंकवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता का दौर है। हम हृदय से आपको उससे बचने की सलाह देते हैं और आशा करते हैं कि इन बुराइयों को दूर करने के लिए अथक प्रयास करेंगे।

यदि आप समझते हैं कि इस प्रांगण में कुछ सुधार की आवश्यकता है तो आपके लिए विद्यालय के दरबाजे हमेशा खुले हैं निर्भय होकर लिखित रूप से हमें दे हम उस पर अवश्य विचार करेंगे।

हम हमेशा बेटों से ज्यादा बेटियों से प्यार करते हैं अपनी बेटियों से आशा करते हैं कि वो शिक्षित होकर विकसित व सफल भारतीय नारी का उदाहरण बनकर हमारे बिगड़े हुए समाज का मार्गदर्शन करेंगी और अपने घर ही नहीं, मौहल्ला ही नहीं, शहर ही नहीं बल्कि पूरे भारत के विकास में पूर्ण रूप से सहयोग करेगी। आपके लिए ये दरबाजे हमेशा खुले हैं जब आपको समस्या आये तो निःसंकोच हमसे संर्पक कर सकते हैं। हमको हमेशा साथ खड़ा पायेंगे।

अन्त में नम आँखों से विदा करते हुए आपको शुभकामनाऐं देते हैं, ईश्वर आपको दीर्घायु दे और समस्याओं से लड़ने की शक्ति प्रदान करे।

ÁcU/kd

,o

leLr fo|ky; ifjokj

शेरवानी इण्टर कॉलेज न्योली, कासगंज

क्र॰ स॰	कक्षा	नाम अध्यापक	मानीटर प्रथम	मानीटर द्वितीय	खेल कप्तान	कक्षा प्रतिनिधि
1.	6–अ	श्रीमती मोनू यादव	कु० यूसरा	कु० सना	कु० लुबना	कु० चेतना
2.	6–ब	श्री अभिषेक कुमार	अभिषेक कुमार	न्दीम	मो० हम्माद खान	बॉबी
3.	6–स	श्री निजामुद्दीन	टीटू कुमार	राहुल कुमार	दिव्यांशू पाण्डेय	मानपाल सिंह
4.	7–अ	श्रीमती कुमकुम माहेश्वरी	प्रायांशी	श्रचना	रश्मि	आलीया
5.	7–ब	डॉ० रामवरन सिंह	प्रवीन कुमार	अविनाश	साजिव अहमद	अरविन्द कुमार
6.	7–स	श्री महेश कुमार	नरेन्द्र सिंह	विशाल	ब्रज लाल	धर्मवीर
7.	8–अ	श्री स्वतन्त्र पाल सिंह	मनप्रीत	सविया सैफी	यशी	हिमानी
8.	8–ब	श्री राम सिंह दिनकर	खुशवेन्द्र वघेल	जीशान	हर्षित पाण्डेय	विकाश बाबू
9.	8–स	श्री संजीव कुमार	कुलदीप कुमार	राहुल मारवाड़ी	सौरभ दुबे	रामरतन
10.	9–अ	कु० शशिवाला	कु० साक्षी	कु० फौजिया	कु० नीरज	कु० विष्णु प्रिया चौहान
11.	9–ब	श्री देव करन मौर्य	विनीत कुमार	राघवेन्द्र	आदिल	अमन कुमार
12.	9–स	श्री कुन्दन सिंह	आकाश कुमार	योगेश कुमार	आमिर सैफी	इमरान खान
13.	10–अ	श्री मिथलेश कुमार	कु० अकांक्षा	कु० सर्वेश	कु० सुरभी	कु० प्रीती/मुंशी लाल
14.	10–ब	श्री राजीव सैनी	कु० कविता दिनकर	कु० हरवेश बघेल	मो० रियाजुल	राहुल कुमार
15.	10–स	श्री श्रवण कुमार	मेहित कुमार	अर्जुन सिंह	कु० स्नेहलता	मीनू निषाद
16.	11–अ	श्री मनोज कुमार शर्मा	माल्ती सोलंकी	स्वाती हल्दिया	भानु प्रताप	निधि पाठक
17.	11–ब	श्री नरेन्द्र सिंह यादव	अंकित गुप्ता	ब्बलू	राहुल शर्मा	श्रवीना
18.	11–स	श्री सलीमुद्दीन	नजिम	जाकिर	शाहरूख	अंकित साहू
19.	12–अ	श्री नीरज यादव	कु० साधना	कु० राजलक्ष्मी	कु० शीतल	अतेन्द्र पाल सिंह
20.	12–ब	श्री राम शंकर विरले	उमेश तिवारी	कु० माहपारा	कु० दीपशिखा	कु० श्वेता शर्मा
21.	12–स	श्री सुनील तोमर	कमल सिंह	प्रियेश कुमार	संदीप कुमार मौर्य	उपदेश

विद्यालय का परीक्षाफल

कक्षा	सम्मिलित परीक्षार्थी	उत्तीर्ण			योग	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण
		I	II	III			
VI	218	19	78	119	216	02	99.8 %
VII	204	15	56	132	203	01	99.5%
VIII	203	25	97	79	201	02	99.1%
IX	321	12	161	92	265	56	82.5%
X	295	–	–	–	295	–	100%
XI	268	18	45	134	197	71	73.5%
XII	163	105	56	–	161	02	98.7%

fo|ky; dh d{kkvk e lokRre vad çkIr Nk=@Nk=kvk dh lph ¼d{kkokj½ l=&2013

Øå lå	uke	d{kk
1-	कु० प्रियांशी	6
2-	खुशवेन्द्र कुमार वघेल	7
3-	कु० आयशा	8
4-	कु० कविता दिनकर	9
5-	कु० सबीहा खातून	10
6-	आदित्य कुमार	11
7-	कु० माला	12

भारतीय ऐतिहासिक राजनीति में विष्णु गुप्त / चाणक्य, कौटिल्य का योगदान

लोक व्यवहार और राजनीति के गूढ़ रहस्यों को सरल–सुगम भाषा–शैली में समझाने वाले व्यक्तित्व (इतिहास पुरूष)

मैं लोगों की भलाई की इच्छा से राजनीति के उन गूढ़ रहस्यों का वर्णन कर रहा हूँ, जिन्हें जान लेने मात्र से मनुष्य सर्वज्ञ हो जाता है अर्थात् और कुछ जानना शेष नहीं रहता।

- जो जैसा करे, उससे वैसा ही बरतें। कृतज्ञ के प्रति कृतज्ञता भरा, हिंसक से हिंसा भरा और दुष्ट से दुष्टता भरा व्यवहार करने पर किसी प्रकार का पाप नहीं होता।

- किसी कष्ट अथवा आपत्तिकाल से बचाव के लिए धन की रक्षा करनी चाहिए। धन खर्च करके भी स्त्रियों की रक्षा करनी चाहिए, परन्तु स्त्रियों और धन से भी आवश्यक है कि व्यक्ति स्वयं की रक्षा करे।

- मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि काई भी कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व उसे इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि वह कार्य करने योग्य है या नहीं, इसका परिणाम क्या होगा ? पुण्य कार्य और पाप कर्म क्या है ?

- यह बात जान लेना भी आवश्यक है कि धर्म और अधर्म क्या है ? धर्म की व्याख्या के अनुसार किसी की हत्या करना अपराध और अधर्म है, परन्तु लोकाचार और नीतिशास्त्र के अनुसार विशेष परिस्थितियों में यदि किसी की हत्या की जाती है तो वह कार्य विरूद्व नहीं माना जाता।

- मूर्ख शिष्य को उपदेश देने, दुष्ट–व्यभिचारिणी स्त्री का पालन–पोषण करने, धन को नष्ट होने वाले तथा दुखी व्यक्ति के साथ व्यवहार रखने से बुद्विमान व्यक्ति को भी कष्ट उठाना पड़ता है।

- दुष्ट स्वभावशाली, कठोर वचन बोलनेवाली, दुराचारिणी स्त्री और धूर्त तथा दुष्ट स्वभाव वाला मित्र तथा सामने वाला मित्र तथा सामने बोलनेवाला मुहंफट नौकर और ऐसे घर में निवास जहां सांप के होने की संभावना हो, यह सब बातें मृत्यु के समान है।

- जिस देश में आदर–सम्मान नहीं और न ही आजीविका का कोई साधन है, कोई बन्धु–बांधव और रिश्तेदार भी नहीं तथा किसी प्रकार की विद्या तथा गुणों की प्राप्ति की संभावना भी नहीं, ऐसे देश को छोड़ देना चाहिए। ऐसे स्थान पर रहना उचित नहीं। जहां धनिक, श्रोत्रिय अर्थात् वेद को जानने वाला ब्राह्मण, राजा, नदी, और वैद्य ये पांच चीजे न हो, उस स्थान पर मनुष्य को नहीं रहना चाहिए।

- काम लेने पर नौकर–चाकरों की, दुख आने पर बन्धु–बान्धवों की, कष्ट आने पर मित्र की तथा धन नाश होने पर अपनी पत्नी की वास्तविकता का ज्ञान होता है।

- किसी रोग से पीड़ित होने पर, दुख आने पर, अकाल पड़ने पर, शत्रु की ओर से संकट आने पर, राज्यसभा में तथा श्मशान अथवा किसी की मृत्यु के समय जो व्यक्ति साथ नहीं छोड़ती, वास्तव में वही सच्चा बन्धु माना जाता है।

मशकूर हसन

प्रधानाचार्य

न आदमी छोटा था, न ही कसौटियाँ

¼भारतीय भाषा परिषद कोलकता

द्वारा 'युवा साहित्य' पुरस्कार प्राप्त½

Ukhj t dekj ;kno

प्रवक्ता हिन्दी

वाद–प्रतिवाद और संवाद प्रबुद्ध समाज की खुराक है। इलाहाबाद विश्व विद्यालय के निराला अध्ययन एवं शोध पीठ के तत्त्वावधान में आयोजित गोष्ठी 'समकालीन विमर्श और निराला वा साहित्य' के अन्तर्गत दूसरे दिन के प्रथम सत्र में 'निराला के साहित्य में हाशिए का समाज' विषय पर बोलते हुए प्रसिद्ध दलित आलोचक कँवस भारती जी ने निष्कर्ष दिया कि निराला के साहित्य में हाशिए का समाज हाशिए पर ही पड़ा दिखता है। भारती जी ने निराला पर कुछ आरोप लगाये, जो बिन्दुवार इस प्रकार हैं –

- निराला ने जाति–पॉति तोड़क मण्डल, संतराम जी तथा उनके प्रयासों जैसे अन्तर्जातीय विवाह तथा छोटी जातियों द्वारा जनेऊ आदि धारण करने का विरोध करते हुए, मनु और शंकराचार्य द्वारा शूद्रों के प्रति किये कठोर अनुशासनों को तर्क संगत बताया है।
- पहले दिन 'सत्ता विमर्श' पर बोलते हुए किसी वक्ता ने कहा था कि प्रेमचन्द ने दलित समाज को बाहर से देखा था, जबकि निराला ने अन्दर से। भारती जी का मत इसके विपरीत है।
- प्रेमचन्द निराला आदि साहित्यकार अपनी स्वर्ण ग्रन्थि के कारण दलित पात्रों का चरित्र–हनन करते हैं। प्रेमचन्द ने कफन में जो किया वह सर्वविदित है। निराला भी एक तरफ चतुरी को कबीरपंथी बताते हैं तो दूसरी तरफ चरसी और माँसाहारी भी कहते हैं।
- 'बिल्लेसुर बकरिहा' एक साहित्यिक षड्यन्त्र का परिणाम है जिसका उद्देश्य दलित के हिस्से की सहानुभूति ब्रह्मण को दिलाना है।

बाद के वक्ताओं ने रीवा से आये दिनेश कुशवाहा जी ने जो कुछ कहा उसका निष्कर्ष यह था कि उस समय रात 'बहुत–अन्धेरी' थी, इसलिए इन लोगों ने जो 'टूटे–फूटे' दीये जलाये हमें उन्हीं की रोशनी से काम चलाना पड़ेगा। गोरखपुर से आये दीपक त्यागी ने कहा कि निराला बड़े आदमी हैं जबकि दलित आलोचकों की कसौटियाँ छोटी। अतः दलित आलोचक उन्हें अपनी कसौटी पर कसने के लिए विकृत करके छोटा बनाना चाहते हैं। अन्त में अपने अध्यक्षीय भाषण में गोपेश्वर जी ने विरूद्धों में सामांजस्य स्थापित करते हुए कहा कि निराला के सम्पूर्ण साहित्य के प्रकाश में उन्हें दलित विरोधी नहीं कह सकते हैं। हमें मुक्ति के लिए मिलकर लड़ना चाहिए, अलग–अलग नहीं, क्योंकि मुक्ति कभी अकेले नहीं मिलती। बड़े–बड़े शब्दों और उधार की

लाक्षणिक भाषा में विमर्श अपना रास्ता भटक गया। किसी भी विद्वान वक्ता ने उन आरोपों का सीधे सामना नहीं किया, जो भारती जी ने आधार वक्तव्य में लगाया था। मुझे लगता है कि न तो आदमी छोटा था, न ही कसौटियाँ। सोने को अपना खरापन सिद्ध करने के लिए कभी–कभी खरोचें भी सहनी पड़ती हैं। विशेषकर तब जब इतनी मैल जम गयी हो। भारती जी के आरोपों की पड़ताल के बिना न तो निराला की मुक्ति सम्भव है न भारती जी की ही। आखिर अकेले थोड़े मिलती है।

आइये निराला की दलित चेतना खरोंचते हैं। भारती जी की बातें निराधार नहीं हैं। दिसम्बर 1929 ई० में 'माधुरी' में निराला का एक लेख प्रकाशित हुआ, 'वर्णाश्रम धर्म की वर्तमान स्थिति'।[1] इस लेख में निराला का दलित दृष्टिकोण स्पष्टः दूषित और पाखण्डपूर्ण है। उन्होंने 'ननिवसेत म्लेच्छराजेः' अनुशासन सूत्र की प्रशंसा कर शंकराचार्य द्वारा शूद्रों के प्रति किये कठोर दण्ड विधान को नीति सम्मत बताते हुए तर्क देते हैं कि, ''तत्कालीन एक ब्राह्मण का उत्कर्ष और एक शूद्र का बराबर नहीं हो सकता। एतएव दोनों के दण्ड भी बराबर नहीं हो सकते। लघु दण्ड से शूद्रों की बुद्वि भी ठिकाने नहीं आती। दूसरे, शूद्रों से जरा से उपकार पर सहस्त्र–सहस्त्र अपकार होते थे। उनके दूषित बीजाणु तत्कालीन समाज के मंगलमय शरीर को अस्वस्थ करते थे, इनकी इतर वृत्तियों के प्रतिघात प्रतिदिन और प्रतिमुर्हूत समाज को सहना पड़ता था''[2] यहाँ निराला शूद्रों को 'उद्दण्ड' और 'संक्रामक' के रूप में प्रस्तुत करते हुए कठोर दण्ड का पात्र बता रहे हैं। जबकि शदाब्दियों से वर्णत्रय के शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषणों को सहकर दीन–मलिन जीवन जीने वालों के प्रति कठोर दण्ड विधान करना उसी शोषण का ही एक अंग है। वे दण्ड के नहीं दया के पात्र हैं। वस्तुतः निराला की इतिहास दृष्टि ही यहाँ दूषित है। वे आगे तर्क देते हैं कि ''इन इतने पीड़नों को सहते हुए अपने जरा से बचाव के लिए अगर द्विज समाज ने शूद्रों के प्रति कुछ कठोर अनुशासन कर भी दिए, तो हिसाब में शूद्रों द्वारा किए गये अत्याचार द्विज समाज को अधिक सहने पड़े थे।''[3] यहाँ पर निराला शूद्रों के जिन अत्याचारों की चर्चा कर रहे हैं उनका स्त्रोत अब तक के ज्ञात भारतीय इतिहास के बाहर पुराणाश्रित कथाएँ हैं, जिनमें शूद्रों की पहचान यज्ञ–ध्वंषक तथा ब्राह्मणों का माँस खाने और रक्त पीने वाले दैत्यों के रूप में की गयी है। आश्चर्य कि निराला यह लिखते समय निरामिष–अस्थिशेष शूद्र नहीं याद आते जिसका रक्त–माँस मनु स्मृति अनुशासन रूपी दैत्य मुख से सतत् भक्ष रहे थे। रही बात शंकराचार्य के 'तत्कालीन' स्थिति की तो स्पष्ट है कि जितनी हेय स्थिति उस समय शूद्रों की थी, शायद ही किसी अन्य समय रही हो। ऐसे में इस प्रकार के विवेकहीन और पक्षपातपूर्ण अनुशासन इनकी दीनता को और बढ़ाते ही हैं।

इसी लेख में निराला ने सन्तराम जी के 'जाति–पॉति–तोड़क मण्डल' की अन्तर्जातीय विवाह नीति की आलोचना की है, विशेषकर ब्राह्मण कन्या से शूद्र वर के। एक तरफ निराला लिखते हैं कि ''जहाँ शूद्रों के प्रति स्मृतिकारों ने कठोर दण्ड की योजना की है, वहाँ उन्होंने यह भी लिखा है कि– ''श्रद्धापूर्वक शुभ विद्या, श्रेष्ठ धर्म और सुलक्षणा स्त्री अन्त्यजों के निकट से भी ग्रहण करे।'' इसका पुरस्कार उन्हें क्या दिया जा रहा है ? क्या इन पंक्तियों में अन्त्यजों के

बहिस्कार या विरोध की कोई ध्वनि निकलती है ?"[4] इसका उत्तर होगा, हाँ! निकलती है क्योंकि इन ज्ञान काण्ड स्मृतिकारों ने यह व्यवस्था नहीं दी कि शुभ विद्या और श्रेष्ठ धर्म से युक्त शूद्रों को ब्राह्मण अपनी सुलक्षणा कन्या दें। यह तो एक सांस्कृतिक कूटनीति है कि एक तरफ शूद्रों को विद्या और धर्म से निषिद्ध कर दिया जाय और दूसरी तरफ उनमें जो कुछ भी स्वयंभू रूप से श्रेष्ठ उत्पन्न हो जाये, उसे भी हड़प लिया जाये। दूसरी तरफ निराला ब्राह्मण कन्या का विवाह शूद्र वर से करने के प्रश्न पर महात्मा गांधी को इस प्रकार घेरते हैं, "उनकी राय में एक ब्राह्मण कन्या का विवाह शूद्र कर सकता है, मेरे विचार से एक ब्राह्मण बालिका के मानी यहाँ एक शूद्र बालिका ही हो अगर ब्रह्मण बालिका का अर्थ महात्मा जी ब्राह्मण बालिका ही करते हों तो मैं सविनय कहूँगा कि इतनी तपस्या करके भी महात्मा जी 'ब्राह्मण' का अर्थ नहीं समझ सके। मैं ब्राह्मण का तपस्या जन्य अर्थ ही लेता हूँ, जो उसका उचित निर्णय है।"[5] निःसन्देह ब्राह्मण शब्द का तपस्या जय अर्थग्रहण करने का निर्णय उचित है, लेकिन अवसर पड़ने पर ही ऐसा करना धूर्तता है। निराला आगे लिखते हैं कि ''ब्राह्मणों में भंगी, चरसी, शराबी और कबाबी हैं, पर इसलिए उनकी तुलना अन्त्यजों से नहीं की जा सकती। एक तो संख्या में कम ऐसे ब्राह्मण हैं और अन्त्यजा अधिक। दूसरे तुलना यह इस तरह की है जैसे करोड़पति के ऐयाश दिल लड़के से मजदूर के ऐयाश दिल लड़के की।''[6] क्या यहाँ पर भी निराला ब्रह्मण का तपस्या जन्य अर्थ ग्रहण कर रहे हैं ? प्रतिलोम विवाह के प्रश्न पर ब्रह्मण का तपस्या जन्य अर्थ और आचरण के प्रश्न पर जन्म–जात अर्थ ग्रहण करके निराला अपने दोहरे मानदण्ड का प्रमाण देते हैं। और मजदूर के ऐयाश दिल लड़के वाली बात से तो निराला के पूरे विवेक की पोल खुल जाती है। ऐसे में नजीर अकबराबादी की ये पंक्तियाँ याद आती हैं, ''सौ–सौ तरह के ऐब लगाती है मुफलिसी।'' इस लेख को लिखने के लगभग छः माह पहले निराला ने अपनी पुत्री का विवाह किया था, तब उनके सम्मुख अपने वर्ण में योग्य वर की समस्या खड़ी हुई थी। अतः हम इसे वर्णाश्रम धर्म के प्रति निराला की 'आत्महत्या आस्था' के रूप में भी चिन्हित कर सकते हैं।

वस्तुतः निराला ने 'वर्णाश्रम धर्म की वर्तमान स्थिति' लेख घोर ब्राह्मणवादी चेतना में लिखा है जिसके कारण वे तर्क–वितर्क के स्तर से नीचे उत्तर कर कुतर्क के स्तर तक चले आते हैं। इसके बाद उनका एक दूसरा लेख जनवरी 1930 ई० में 'सुधा' में 'वर्तमान हिन्दू समाज'[7] प्रकाशित हुआ। इसमें निराला ने शंकराचार्य को ज्ञानकाण्ड का संस्थापक और भक्ति आन्दोलन को इसके विरूद्ध खड़ा 'हृदय धर्म' की प्रबलता वाला बताते हुए, भक्ति–आन्दोलन की नकारात्मक छवि इन शब्दों से प्रस्तुत की है, ''वैष्णव धर्म की उदारता के कारण भारतवर्ष में दुर्बलता खूब फैली। हृदय धर्म के कारण यहाँ के लोग सुखों की कल्पना में भूल गये। चारित्रिक पतन हुआ। अनेक देव–देवियों की उपासना फैल गई। साधरण कोटि के लोगों में विचारों की उच्चता न रही। वे उपन्यासों के पाठकों की तरह पुराणों के उपाख्यानों में आ पड़े। ज्ञान का विस्तार सीमा में बँध गया। अपढ़ रैदास भी जब ईश्वर प्राप्त करने लगा और नाम की महता का प्रचार हुआ, तब बस फिर क्या था माला जपना मुख्य और अध्ययन गौण हो गया। फल यह कि द्विजाति भी विद्या से रहित, दुर्गणों से भरे–पूरे होने लगे।''[8] आश्चर्य कि निराला बहुदेव वाद तथा कर्मकाण्ड के प्रचार का अपयश कलश अनपढ़, अस्पृश्य सहृदय सन्तों (रैदसादि) के सिर

पर फोड़ते हैं जबकि तुलसीदास जैसे पढ़े लिखे ब्राह्मण कवि विनय पत्रिका में इकट्ठे दो दर्जन से अधिक देवताओं और देवियों की स्तुति करते हैं तथा सभी प्रकार के कर्मकाण्ड ब्रह्म (विष्णु) के अवतार से कराकर ब्रह्म पर कर्मकाण की प्रतिष्ठा करते है। दूसरी तरफ अस्पृश्य–अनपढ़ कबीर इनका प्रचण्ड विरोध किया है। ब्राह्मणों में अशिक्षा और दुर्गणों के प्रचार के लिए रैदास नहीं बल्कि यह आत्म प्रपंचना दोषी है–

"पूजिय विप्रसील गुन हीना। सूद्र न गुनगन ग्यान प्रवीना।।"[9]

लेकिन इसी लेख में निराला दलितों के प्रति आशान्वित भी दिखते हैं, "ब्राह्मण और क्षत्रियों में उस सभ्यता का ध्वंसावशेष ही रह गया है। उनकी आँखों का वह पूर्व स्वप्न अब शुद्व और अन्त्यजों के शरीरों में भारतीयता की मूर्तियों की तरह प्रत्यक्ष होगा।"[10]

हम देखते हैं कि उत्तरोत्तर निराला का दलितों के प्रति दृष्टिकोण सुधरता है। दरअसल कोई निराला पैदा नहीं होता, निराला बनना पड़ता है। जो निराला 'वर्णाश्रम धर्म की वर्तमान स्थिति' पर सोचते हुए मलिनता के कारण शरीर और समाज के लिए शूद्रों को अमंगलकारी मानते हुए कठोर दण्ड का समर्थन करते हैं वही तीन–चार साल बाद लखनऊ के हिवेट रोड पर होटल के जूठन पर पलने वाली पगली (देवि) की अनुपस्थिति में उसके रो रहे बच्चे को मित्र की चेतावनी कि 'अरे यह गन्दा रहता है।'[11] के बावजूद भी अपनी गोद में झुला कर सुलाते हैं। यही निराला का वास्तविक 'निरालत्व' है। निराला की इतिहास दृष्टि से भी स्वच्छ होती है। 'तुलसीदास' कविता में वे लिखते हैं कि–

"शूद्र गण क्षुद्र–जीवन–सम्बल, पुर–पुर में/वे शेष श्वास, पशु मूक भाष,/पाते प्रहार अब हताश्वास/सोचते कभी, आजन्म ग्रास द्विजगण के/होना ही उनका धर्म परम,"[12]

स्पष्ट है कि किसने किसका शोषण किया। निराला न सिर्फ चतुरी के पुत्र अर्जुन के अवैतनिक अध्यापक बनते हैं बल्कि उसके स्वाभिमान को आहत करने पर अपने पुत्र राधाकृष्ण को ननिहाल वापस भेज देते हैं। आगे चलकर वे अर्जुन को शिष्य से मित्र[13] बना लेते हैं।

"पूजिय विप्र सील गुन हीना" का विरोध करते हुए वे लिखते हैं कि "लोगों से पुजाने का पाखण्ड बड़ी ही नीच मनोवृत्ति का परिमाण है।"[14] रैदास पर भी कविता लिखकर निराला उनके महत्व को स्वीकारते हैं। ज्ञान का सम्बन्ध न साक्षरता से है न ही ब्राह्मण होने से इसी समझ के साथ वे स्वीकारते हैं कि, "हिन्दी साहित्य का ज्ञानकाण्ड यदि कबीर के साहित्य को कहें तो अत्युक्ति न होगी।"[15] जिस झींगुर लोध अगर ब्राह्मणों को शिक्षा देने के लिए अग्रसर होंगे तो सन्तराम जी की तरह उन्हें हास्यास्पद होना पड़ेगा।"[16] उसी झींगुर लोध के संघर्षशील व्यक्तित्व से प्रभावित होकर 'झींगुर डटकर बोला' जैसी कविता लिखते। अन्तर्जातीय विवाह पर भी निराला अपनी दृष्टि बदलते हैं। अगस्त 1993 सुधा में 'राजनीति और समाज' शीर्षक लेख में वे लिखते, "आज कल ब्राह्मणेत्तर समाजों में ऐसे मनुष्यों की कमी नहीं जो विद्या और बुद्धि में ब्राह्मणों के बराबर हैं। फिर ब्राह्मणों की कन्याओं का उनके साथ और उनकी कुमारियों का ब्राह्मणों के साथ मानसिक मेल तथा विवाह असंगत या अस्वभाविक कदापि नहीं।"[17] निराला

स्वयं स्वीकारते हैं कि "उम्र की बाढ़ के साथ अक्ल बढ़ती है।"[18] दलितों के प्रति अपने पुराने दृष्टिकोण पर निराला को गहरा प्रायश्चित था। यही प्रायश्चित का स्वर तब सुना जा सकता है जब वे कुल्टी भाट की अछूत पाठशाला देखने जाते हैं, "बिना वाणी की वह वाणी, बिना शिक्षा की वह संस्कृति, प्राण का पर्दा–पर्दा पार कर गयी। लज्जा से मैं वही गड़ गया। वह दृष्टि इतनी साफ है कि सब कुछ देखती–समझती है। वहाँ चालाकी नहीं चलती। ओफ कितना मोह है।"[19] यहाँ पर "लज्जा से मैं वही गड़ गया" और "वहाँ चालाकी नहीं चलती" वाक्यों के मर्म गहरे हैं। कुल्ली भाट में ही एक जगह निराला लिखते हैं कि "तब मैं ब्राह्मण था।"[20] ऐसा लिखते समय निराला स्वयं को क्या पाते हैं। शूद्र (अछूत) ब्राह्मण या मनुष्य मात्र ? वस्तुतः निराला ने दलित–विमर्श का जो 'टूटा फूटा' दीया जलाया वह उनके सवच्छन्द स्वभाव और सामाजिक बन्धनों के घर्षण से पैदा हुई हृदय की आग से जला था जिससे उन्होंने अपने घर जलाकर उसे 'हाउस ऑफ कामन्स'[21] बना दिया।

कँवल भारती जी कहते हैं कि छोटी जातियों द्वारा जनेऊ धारण करने से निराला के ब्राह्मणत्व को आघात पहुँचा, इसलिए वे लिखते हैं कि ".....तोड़कर फेंक दीजिए जनेऊ, जिसकी आज कोई उपयोगिता नहीं, जो बड़प्पन का भ्रम पैदा करता है और समस्वर से कहिए कि आप उतनी ही मर्यादा रखते हैं जितना आपका नीच–से–नीच पड़ोसी चमार या भंगी रखता है। तभी आप महापुरूष हैं।"[22] भारती जी को आपत्ति है कि निराला केवल छोटी जातियों को जनेऊ तोड़कर फेंकने को कहते हैं ब्राह्मणों को क्यों नहीं ? अगर यह उनमें मिथ्या श्रेष्ठता का भ्रम पैदा करता है तो क्या ब्राह्मणों के वास्तविक श्रेष्ठता का प्रतीक है और अन्त में यह कि क्या निराला अपनी बात 'नीच' शब्द के प्रयोग के बिना पूरी नहीं कर सकते थे ? उत्तर में यही कहूँगा कि यदि 'कुल्ली भाट' को सावधानी से पढ़ा जाये तो पता चलेगा कि जनेऊ संस्कार के कुछ दिन बाद ही निराला से उनके स्वछन्द स्वभाव के कारण जनेऊ उतरवा ली गयी थी। निराला पुनः जनेऊ तब धारण करते हैं जब कोई भी पुरोहित कुल्ली का 'एकादशाह–संस्कार' कराने को तैयार नहीं होता। एकादशाह कराकर लौटे तो पुनः जनेऊ उतारकर अपने मुसलमानिन यमजान के संस्कार के अनुरूप गोश्त खाया। अतः निराला पर जनेऊ मोह का आरोप निराधार है। वस्तुतः निराला यह समझ चुके थे कि जनेऊ अस्पृश्यता को बढ़ती ही है। जैसा कि निराला एक प्रसंग बताते हैं कि उनकी ससुराल से आये नव जनेऊधारी 'अहीर–क्षत्रिय' ने यह कहते हुए उनके घर खाने से इंकार कर दिया कि मेरा जनेऊ हो गया है। सोचिए अगर यह नव जनेऊधारी वर्ण ब्राह्मण के प्रति इतनी अस्पृश्यता रखता है तो वह पहले से ही अस्पृश्य घोषित जातियों के प्रति कैसा भाव रखता होगा। रही बात नीच शब्द के प्रयोग की तो यह निःसन्देह आधुनिक हिन्दी साहित्य के सबसे समर्थ और सजग शब्दकार की बड़ी चूक है। लेकिन ध्यान कि निराला ने नीच नहीं अपितु 'नीच–से–नीच' शब्द का प्रयोग किया है। इसका मर्म ओमप्रकाश बाल्मीकि की कहानी 'शवयात्रा'[23] से समझा जा सकता है, जहाँ एक अस्पृश्य समझी जाने वाली जाति 'चमार' दूसरी अतिअस्पृश्य समझी जाने वाली जाति 'वल्हार' के प्रति अति अमानवीय व्यवहार करती है।

अब रहा यह प्रश्न कि दलित समाज को अन्दर से किसने देखा था, प्रेमचन्द ने या निराला ने। तो मेरी समझ से निराला ने ही अन्दर से देखा था। निराला का चतुरी, अर्जुन, पगली आदि से वास्तविक जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध रहा जबकि प्रेमचन्द के दलित पात्र काल्पनिक थे। प्रेमचन्द न तो किसी चतुरी के शिष्य थे, न ही किसी अर्जुन के गुरू। हाँ यदि एक अन्य अति प्रखर दलित आलोचक के इस निष्कर्ष कि बुधिया के पेट में जो बच्चा था प्रेमचन्द का था, के प्रकाश में विचार करें तो प्रेमचन्द की दलित समाज अधिक प्रमाणिक है। क्योंकि माधव–घीसू हो सकते हैं, जबकि चतुरी–अर्जुन हैं। चरित्रों की इसी प्रमाणिकता के आधार पर निराला पर दलित–चरित्र–हनन का आरोप स्वतः खण्डित हो जाता है। हाँ प्रेमचन्द पर यह आरोप लगाया जा सकता है क्योंकि इनके दलित चरित्र समाज में सीधे अविकृत रूप से नहीं उठाये गये हैं। फिर प्रेमचन्द ही क्यों यह प्रवृत्ति प्रसाद जी में भी देखी जा सकती है। यहाँ पर मैं प्रसाद जी की कम चर्चित कहानी 'विराम–चिन्ह' की चर्चा करूगाँ। यह कहानी एक दलित युवा दल द्वारा मन्दिर में प्रवेश के संघर्ष की कहानी है। दलित युवकों का नेता राधे है। राधे की माँ उसे मन्दिर में प्रवेश की जिद छोड़ने के लिए कहती है। वह इसे पाप मानती है, साथ ही साथ उसे पाखण्डियों द्वारा राधे की क्षति पहुँचाने का भय भी सालता है। लेकिन जब मन्दिर के प्रवेश संघर्ष में राधे शहीद हो जाता है तब उसकी माँ आँखों में खून लिये हुँकार करती है कि "राधे की लोथ मन्दिर में जायेगी।"[24] और पाखण्डियों को पराजित करती है। निःसन्देह यह प्रसाद जी की क्रान्तिकारी कहानी है। लेकिन प्रसाद जी राधे का चरित्र निर्माण करते समय उसे 'अत्यंत मद्यप' और अकर्मण्य बताकर उसका चरित्र हनन करते हैं। लेकिन यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि जिन दलित चरित्रों को हम हनित कहते हैं उनमें विद्रोह की चेतना उतनी गहरी है। 'दुखी' सत्यनारायण की कथा के मोह में पण्डित घासीराम के आमरण शोषण का शिकार हो 'सदगति' को प्राप्त होता है तो दूसरी तरफ 'माधव–घीसू' 'कफन' के आडम्बर रीति को ठेंगा दिखाकर मानव मुक्ति के महायज्ञ में धर्म, पाखण्ड, नैतिकता आदि को स्वाह कर आत्म तृप्ति पाते हैं।

यह आरोप कि 'विल्लेसुर बकरिहा' के माध्यम से निराला दलितों के हिस्से की सहानुभूति दलित ब्राह्मणों को दिलाना चाहते हैं, के उत्तर में यही कहा जा सकता है िकवह मानना पूर्वाग्रह पूर्ण है कि ब्राह्मण शोषित नहीं हो सकता है। कल्पना करिए कि 'होरी' महतों न होकर 'तरी का सुकुल' होता और अवध के तमाम ब्राह्मण–किसानों की भाँति जमीदार को लगान देकर खेती करता तो क्या उसे अच्छी फसल न होने पर लगान देने की चिन्ता न होती, क्या उसे लगान बढ़ने का भय न सताता, क्या वह गयादीन, झींगरसिंह आदि के शोषण का शिकार नहीं होता, क्या उसका भाई गाय को जहर नहीं देता, क्या भाई के घर की कुर्की रूकवाने को वह उधार लेकर रिश्वत नहीं देता, क्या गैर–विरादरी की गर्भवती विधवा को घर में पुत्रवधू के रूप में रखने पर पंच दण्ड नहीं लगाते या फिर जीवन भर गाय रखने की अतृप्त इच्छा लेकर मरने पर उसकी पत्नी को गोदान नहीं करना पड़ता। स्पष्ट है उसकी नियति वैसी ही होती। सभी ब्राह्मण जमीदार और पुरोहित नहीं थे, बल्कि उन्हें भी इनके शोषण का शिकार होना पड़ता था। ऐसे में अगर निराला ने एक शोषित ब्राह्मण जिसका शोषण जमीदार से लेकर पासी तक सभी करने को तत्पर थे कि संघर्षगाथा लिखकर कौन सा अपराध कर दिया। वैसे भी निराला और बिल्लेसुर दोनों

की स्थिति ब्राह्मण समाज में अछूत और दुश्मनों के गढ़ में रहने वाले योद्वा जैसी थी। लेकिन भारती जी का यह भय मिथ्या है कि दलित ब्राह्मण कभी अनुसूचित दलित की पीड़ा को बराबरी कर सकता है। एक और कल्पना करते हैं कि बिल्लेसुर, चतुरी की भाँति चमार होता तो क्या उसका संघर्ष इतना सरल होता ! कदापि नहीं। परदेश में उसे कौन नौकरी देता, गाँव में उसे कौन रख रखाव के ऐवज में मकान देता न ही उसके पास जमीनहोती जिस पर वह शकरकन्द 'मौलिक' खेती ही कर सकता और सबसे बड़ी बात उसे सवर्ण सामाजिक जनों के और प्रचण्ड विरोध षड्यन्त्र का सामना करना पड़ता। उसे केवल 'गरीबी नहीं सामाजिक बेइज्जती अखरती' ।[25] व्यवस्था उसे विवश कर देती कि वह अपना संघर्ष 'छेदनी–पिरकिया' जैसे हथियारों से करें।

निराला विश्व साहित्य के उन 'दुर्लभ' लेखकों में से एक हैं जिन्होंने जिस वर्ग पर लिखा, उनके संघर्ष में भी साथ रहे। बादलों के इस कवि का वयक्तित्व बादलों की तरह ही था, जो अपना सर्वस्व दान कर निःशेष रहा। न जाने कितने कम्बल इस कवि के कन्धे से उतर भिखमगों की रातों का सहारा बने और स्वयं कवि ठिठुरता रहा। निराला के व्यक्तित्व के इस पक्ष से उनके आलोचकों और समर्थकों सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। निराला की दीन–दुखियों और दलितों पर जो करूणा थी उससे जुड़े अनेक संस्मरण लोगों की स्मृतियों में बिखरे पड़े हैं। निराला जब अपने अन्तिम दिनों में इलाहबाद के दारागंज मुहल्ले में चित्रकार कमला शंकर के यहाँ रहते थे। उसी समय में एक संस्मरण पड़ोस में रहने वाले ए.जी. आफिस के कर्मचारी कपिल देव सिंह सुनाते हैं। कमला शंकर जी के यहाँ दावत थी। सभी अन्दर व्यस्त थे। तभी घरों का शौचालय साफ करने वाली लड़की ने प्यास लगने पर पानी के लिए आवाज लगायी। जब किसी ने ध्यान नहीं दिया तो स्वयं बीमार महाप्राण लोटा लेकर बाहर निकले और लड़की के चुल्लू में पानी छोड़ते–छोड़ते उनकी आँखों से भी धार फूट पड़ी। लड़की ने पूछा कि बाबा रोते क्यों हो तो उन्होंने उत्तर दिया तू मेरी सरोज है लेकिन मैं यह लोटा तेरे हाथ में नहीं दे सकता, क्योंकि यह कमला का है।[26] जो व्यक्ति एक भंगी की लड़की में अपनी पुत्री का बिम्ब देखता हो उसे दलित विरोधी कैसे कह सकते हैं। लोटा न दे पाने की पीड़ा से कहीं अधिक अस्पृश्यता की पीड़ा है। सच पूछिए तो निराला होने की ही एक अलग पीड़ा है जो निराला बनकर ही समझी जा सकती है। निराला बनना आसान नहीं लेकिन असम्भव भी नहीं है।

और अन्त में प्रार्थना, दलित आलोचकों से, आत्म निरीक्षण करें कि कहीं उनका व्यवहार 'बाल ठाकरे' जैसा तो नहीं है। निःसन्देह दलित–विमर्श भूमि के मूल नागरिक आप ही हैं। लेकिन जो अपना घर छोड़कर आपकी भूमि को समृद्ध करते आये हैं क्या उन्हें अपेक्षाकृत कम प्रतिबद्धता के बाबजूद भी नहीं अपना लेना चाहिए।

यह लेख मूल रूप से इ०वि०नि० की पत्रिका वरगद के लिए लिखा गया था।

1. निराला संचयिता, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ–3 1 3
2. वहीं, पृष्ठ–3 1 7
3. वहीं, पृष्ठ–3 1 7
4. वहीं, पृष्ठ–3 1 8
5. वहीं, पृष्ठ–3 2 0
6. वहीं, पृष्ठ–3 2 3
7. वहीं, पृष्ठ–3 2 4
8. वहीं, पृष्ठ–3 2 9
9. तुलसीदास की पंक्तियाँ
10. निराला संचयिता, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ–3 3 2
11. वहीं, पृष्ठ–2 7 9
12. वहीं, पृष्ठ–6 9
13. निराला की साहित्य साधना–भाग दो, पृष्ठ–2 9
14. वहीं, पृष्ठ–3 1
15. वहीं, पृष्ठ–4 7
16. निराला संचयिता, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ–3 2 3
17. वहीं, पृष्ठ–3 5 7
18. वहीं, पृष्ठ–2 8 2
19. वहीं, पृष्ठ–2 1 6
20. वहीं, पृष्ठ–1 9 1
21. वहीं, पृष्ठ–2 8 4
22. निराला की साहित्य साधना–भाग दो, पृष्ठ–3 1
23. नयी सदी की पहचान श्रेष्ठ दलित कहानियाँ संपादक–मुद्राराक्षस, पृष्ठ–2 1
24. जय शंकर प्रसाद की प्रतिनिधि कहानियाँ–राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ–1 5 6
25. कंवल भारती जी की प्रसिद्ध कविता 'तब, तुम्हारी निष्ठा क्या होती है ?' से।
26. 'निराला का दारागंज, दारागंज के महाप्राण' नरेश मिश्र, सहारा समय (साप्ताहिक) इलाहाबाद अंक, 17 फरवरी 2004 से सार ग्रहण।

गुरू बिना ज्ञान कहाँ

रबीना कुमारी

कक्षा–11ब

भारत एक वह देश है जहाँ गुरू और शिष्य का सम्बन्ध पिता और पुत्र की भाँति है। संसार में गुरू ही एक ऐसा व्यक्ति है। जो हमारे भीतर की प्रतिभा को जगाता है–

''गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाये।

बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताये''

अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहती हूँ कि भारत में गुरू और शिष्य की परंपरा तो बहुत ही प्राचीन है। जैसे द्रोणाचार्य और अर्जुन, द्रोणाचार्य और एकलव्य की शिष्य गुरू परम्परा का दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। हमें कोई चीज सीखने के लिए गुरू के प्रति आदर भाव जरूर रखना चाहिए। जब एकलव्य जाति के भील होने के कारण गुरू द्रोणाचार्य ने उन्हें शिक्षा देने से इनकार कर दिया तो एकलव्य ने गुरू की प्रतिमा बनाकर उनके समक्ष प्रतिदिन पूरी ईमानदारी और लगन से अभ्यास जारी रखा। इस धनुर्धर के अभ्यास से वह अर्जुन से भी बड़ा धनुर्धर बन गया परन्तु द्रोणाचार्य ने उन्हें सबसे बड़ा धनुर्धर होने का वरदान दे दिया था पर एकलव्य ने भी ऐसी कलाएँ सीख रखी थीं, जो अर्जुन को भी नहीं आती थी। तब गुरू द्रोणाचार्य से उससे गुरू दक्षिणा में दाँऐ हाथ का अँगूठा माँग लिया। एकलव्य ने सहर्ष अपना अँगूठा दे दिया था। इस तरह की भक्ति भाव से हर सीमा को पार किया जा सकता है। बच्चा जन्म लेता है तब बच्चे की माँ ही सब कुछ होती है वह चाचा, बुआ, दादी, बाबा यहाँ तक कि अपने पिता तक को नहीं पहचानता है।

लेकिन जब वह शिक्षा के लिए जाता है तो उसे अर्जुन की तरह जीवन का हर पहलू सीखना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में गुरू ही माता–पिता है और हमें उनकी सेवा करनी चाहिए। गुरू का दर्जा संसार में सबसे ऊँचा दर्जा है। प्रश्न उठता है कि पिता बड़ा है या गुरू ? पिता तो जन्म देकर बच्चे को इस धरती पर छोड़ देते हैं परन्तु इस धरती पर नरक से स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त कराते हैं अर्थात् पिता हमें जन्म देता है और गुरू जीवन में जीने की कला सिखाते हैं इसलिए गुरू भगवान से भी बढ़कर है बिना गुरू के मानव जीवन अधूरा है अर्थात् गुरू के बिना सफलता के शिखर पर नहीं पहुँच सकते।

''जग में इनसे बड़ा न कोई, इनसे घृणा कोई न करे।

इनका ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, इस युग का है विज्ञान।।''

वोकेशनल छात्राओं के विचार

मैं डौली वोकेशनल संचालित 'ड्रेस डिजायनिंग कोर्स' की छात्रा हूँ। जो कि श्रीमती कुमकुम माहेश्वरी द्वारा संचालित है।

मैंने यहाँ कोर्स के माध्यम से विभिन्न तरह के स्त्री व पुरूषों के वस्त्रों की कटिंग करना, सिलना, बैग बनाना, मशीन द्वारा कढ़ाई करना, पीको व रफू करना आदि आधुनिक उपकरणों के माध्यम से सीखा है। जिसके फलस्वरूप आज मैं स्वंय में आत्म विश्वास का अनुभव करती हूँ। आज मैंने सिलाई कला के माध्यम से आजीविका कमाना भी प्रारम्भ कर दिया है।

वर्तमान युग आर्थिक युग है। सभी बालिकाओं का आर्थिक रूप से स्वंय में निर्भर होना अत्यन्त आवश्यक है। ड्रेस डिजायनिंग कोर्स इस दिशा में एक सशक्त कदम है।

मैं सीमा 'ड्रेस डिजायनिंग कोर्स' की छात्रा हूँ। मैंने कोर्स के माध्यम से विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की सिलाई, कढ़ाई, पीको व रफू करना व विभिन्न प्रकार के बैग बनाना सीखा है। आज जब मैं अपने परिवार के सदस्यों के वस्त्रों को स्वंय सिलती हूँ। तब मैं स्वंय को बहुत खुशनसीब समझती हूँ। घर पर सिलाई करने से समय तथा धन की बचत तो होती ही है साथ ही यह कला हमें आत्मनिर्भर भी बनाती है।

मैं भविष्य में अपना बुटीक खोलना चाहती हूँ, जिसके माध्यम से अपने परिवार की आर्थिक रूप से मदद कर सकूँ तथा स्वंय के परिवार के जीवन को उन्नत बना सकूँ।

नारी का महत्व

रबीना कुमारी

कक्षा–ब

सामाजिक संस्थानों द्वारा नारी उत्थान सम्बन्धी प्रस्तावों की भरमार, संविधान के प्रावधानों की घोषणा वर्षों से चले आ रहे हैं आंदोलन नारी के प्रति हमारी अवधारणाओं में परिवर्तन नहीं कर सके हैं दहेज के नाम पर हत्याएँ, आत्महत्याएँ एवं नव वन्धुओं को दी जाने वाली भाँति–भाँति यातनाओं के समाचार प्रायः पढ़ने और सुनने को मिलते रहते हैं। कहने को तो हमें नारी का सम्मान अधिकार प्रदान कर दिए गए हैं उनको प्रोत्साहन देने के लिए आरक्षण की व्यवस्था भी की जा रही है परन्तु परिणाम यह है कि नारी का माता रूप त्रारोहित हो गया। ''नारी को नारी नहीं समझा जाता आखिर नारी भी तो इन्सान है'' नारी पुरूष वर्ग के निकट आधिकारिक भोग की सामग्री बनती जा रही है। आधुनिक काल में मैथिलीशरण गुप्त ने चिर पीड़ा एवं कष्ट को नारी की नियति मानकर उसको अपने प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की और नारी को करूणा के आलंवन रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है–

''अवला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।

आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।''

नारी के जीवन की विडम्बना यह है कि वह पुरूष को जन्म देकर तथा उसको सर्वप्रथम बनाकर स्वंय को उसके प्रति समर्पित कर देती है। इसी से सबला होते हुए भी अबला कही जाती है।

शारीरिक दृष्टि से यद्यपि नारी कोमलांगी है, तथापि यह पुरूष की अपेक्षा अधिक समर्थ ठहराती है। वह अपने शरीर के रक्त द्वारा निर्मित एवं पोषित शरीरों का निर्माण करती है इतना करने पर भी पुत्र कुपुत्र सिद्व होता है। तब भी वह यह कहती है जहाँ भी रहो कुशल रहो सुखी रहो। ऐसी उपकारी नारी के प्रति सामान्य जन को सम्मान के अतिरिक्त अन्य क्या भाव रखना चाहिए। कभी जयशंकर प्रसाद ने बादलों के पीछे झांकती हुई किरण के रूप में नारी के सहज कल्याणकारी स्वरूप का दर्शन किया और समाज को सावधान करते हुए कहा–

जिसे तुम समझे हो अभिशाप,

जगत की ज्वालाओं का मूल।

ईश का वह रहस्य वरदान,

कभी मत इसको जाओ भूल।।

नारी वस्तुतः पुरूष जगत् की प्रेरणा होती है। वह पुरूष को भौतिक और सूक्ष्म जगत् सर्वत्र सृजन की प्रेरणा प्रदान करती है। नारी हृदय की पहचान करते हुए महादेवी वर्मा ने लिखा है कि काव्य और प्रेम दोनों नारी–हृदय की सम्पत्ति है। पुरूष विजय का भूखा होता है और नारी समर्पण की। पुरूष लूटना चाहता है और नारी लुटाना। उसके इस अद्वितीय पक्ष की अवहेलना करके हम प्रायः उसकी अवमाना करते हैं। काल प्रवाह के साथ नारी के कल्याण–कारी स्वरूप का क्षरण होता गया और एक समय आया जब कबीर आदि संतों ने उसको समस्त पापों का मूल मानकर सर्वथा निंदनीय बता दिया। हम आज भी नहीं सोच पा रहे हैं कि संसार में नारी को क्या पद दिया जाए। माता को नरक के द्वार अथवा संसार सागर में निवास करने वाली छाया, ग्रहणी का राक्षसी कहकर उसकी अवहेलना की गई है। आधुनिक काल की नारी संभवतः यह समझ बैठी है कि अर्थ का उपार्जन करके, उसके मौख में वृद्वि होती है परन्तु उसको समझ लेना चाहिए कि उसकी देवी कहने में उसका परिवार भी सम्मिलित है। नारी वास्तव में श्रद्वा स्वरूप होकर हमारे लघुत्व को महत्व की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करती है।

नारी तुम केवल श्रद्वा हो, विश्वास रजत नग पल में।

पीयूस स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

पर्यावरण जागरूता हेतु हिन्दू व इस्लाम धर्म के पर्यावरणीय मूल्य

राम शंकर विरले

(जीव विज्ञान अध्यापक)

पर्यावरण व मानव में अटूट सम्बन्ध है। सभी धर्म पर्यावरण की सुरक्षा व संरक्षा हेतु संवेदनशील रहे हैं, इसमें वनस्पति, जीव, जल, आकाश, वायु, प्रकाश (अग्नि) का उल्लेख व उनसे होने वाले लाभों का वर्णन इस विशेषता के साथ मिलता है कि सुखी जीवन के लिए इन घटकों का संरक्षण आवश्यक है। धर्म केवल सत्कर्म करने के लिए प्रेरित नहीं करते वरन् दुष्कर्म करने से भी रोकते हैं। धर्म का अर्थ है धारण करना। मैथ्यू आरनोल्ड के अनुसार ''धर्म भावनामय नैतिकता के अलावा कुछ नहीं है।'' धर्म मानव को सत्य असत्य व कर्तव्य का ज्ञान देता है।

पर्यावरण दो शब्दों परि + आवरण से मिलकर बना है जिसका अर्थ है, चारों से विदा हुआ, अर्थात् समस्त जैविक व अजैविक घटक (वनस्पति, जीव, भूमि, जल, वायु) जो हमारे चारों ओर है पर्यावरण बनाते हैं। इन सवकी मात्रा इतनी व्यवस्थित व संतुलित है कि जीवन चलता रहे।

प्रारम्भ में मानव ने पर्यावरण को अपने विकास में सहयोगात्मक रूप में देखा लेकिन कालान्तर में उसने विकास हेतु औद्योगिक क्रांति का सहारा लिया और प्रकृति का दोहन करना शुरू कर किया धीरे–धीरे पर्यावरण के घटक प्रदूषित होने लगे आज मानव प्रकृति का प्रतिद्वन्दी बन गया है विज्ञान ने मानव को सुखी बनाया लेकिन धर्म ही उसे शाश्वत सुख प्रदान कर सकता है।

संसार में विभिन्न धर्म समय–समय पर विभिन्न देशों में जन्म लेते रहे हैं। ऋषि मुनि, पीर पैगम्बर, साधु संत, महात्मा, मनुष्य की आत्मिक उन्नति के लिए पथ प्रर्दशन करते रहे हैं। सभी धर्मों के मूल में ''प्रकृति संरक्षित तो जीवन सुरक्षित'' का मूल भाव निहित है।

विभिन्न धर्मों के मूल में प्रकृति वर्णन और प्राकृतिक संसाधनों की महत्वता व पर्यावरणीय मूल्य निम्न है –

fgUnw /keZ %& इस धर्म में सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद व उपनिषद है इसके अनुसार पदार्थ की उत्पत्ति एवं जीव जगत की सृष्टि अग्नि, जल, पृथ्वी के विनियोग से हुई है अतः इन्हें सुरक्षित रखना आवश्यक है। इसके अनुसार आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी पंच तत्व हैं और इनसे ही प्राणि मात्र को जीवन मिलता है और मृत्यु के बाद इसी में विलीन हो जाता है।

जल की महत्वता को हिन्दू धर्म में इस प्रकार स्वीकार किया जाता है कि जब हम नदी में स्नान करने जाते हैं तो पहले नमन करते हैं। ऋग्वेद में इसका उल्लेख इस प्रकार है – ''आकाश, नदी और कुओं के पानी जिनका स्त्रोत सागर है यह सब मेरी रक्षा करें।

वनस्पति और पेड़ पौधों के महत्व को हिन्दू धर्म में मान्यता दी है। और किसी न किसी प्रकार हर पेड़ को देवी–देवता या अन्य मान्यता से जोड़कर उसकी रक्षा करने का उपाय कालान्तर से बनाए रखा गया है। वैज्ञानिक दृष्टि से जो महत्व आज वृक्षों का बताया जाता है। वह पूर्व काल में अप्रत्यक्ष रूप से ही प्रचलन में था। प्राचीन काल से ही हिन्दू धर्म में बड़ी सुन्दर व्यवस्था की गई है। अनेक देवी–देवताओं को वनस्पति व जीव जन्तुओं से जोड़ना इसी क्रम में आंका जा सकता है जिससे प्रकृति का संतुलन व्यवस्थित हो सके।

यही नहीं बल्कि हिन्दू धर्म ग्रंथों में प्रदूषण फैलाने से रोकने व दोषियों को दंड देने की भी व्यवस्था है।

इससे स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म पर्यावरण के संरक्षण हेतु व उसे विकृति से बचाने हेतु कितना जागरूक है।

bLyke /ke% इस्लाम धर्म ऐकेश्वरवादी है, उनकी एक सर्वांगीण शक्ति खुदा है जिसके अनुसार समस्त गतिविधियां चलती हैं। 'कुरान' उनकी धर्म पुस्तक है, जिसमें इस धर्म के लोगों को करने या न करने के सभी कार्यों के लिए निर्देशन हैं। इस्लाम में निम्न तीन बिन्दुओं पर अधिक महत्व दिया गया है –

1. ब्रह्माण्ड में प्रत्येक वस्तु का निर्माण अल्लाह ने किया है और उसी ने नियम बनाये हैं।
2. उसने ही सभी वस्तुओं को एक निश्चित मात्रा में बनाया है।
3. प्रत्येक व्यक्ति को अनुपात के हिसाब से संतुलन को चलाना है।

यह तीनों बिन्दु अपने आप में इतनं सम्पूर्ण हैं कि इनमें प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं के प्रति सहज दृष्टिकोण और उनके साथ व्यक्तियों का व्यवहार स्पष्ट निर्देशित है। इसी सन्दर्भ में कुरान में लिखा है –

''अल्लाह ने जो कुछ भी हमारे लिए बनाया है, उसके अपव्यय की सख्त मनाही है और इस्लाम में यह निषेध है।''

पेड़ पौधों, जीव व जंगलों की सुरक्षा हेतु इस्लाम की पुस्तकों में स्पष्ट उल्लेख है। इस्लाम में जल को व्यक्ति के पवित्र करने का एक मात्र साधन माना है और खुदा की इवादत के साथ यह भी कहा जाता है कि ''अल्लाह की प्रशंसा करनी चाहिए कि इस्लाम और उसकी इबादतें हमें दी। अल्लाह की प्रशंसा करनी चाहिए जिसने हमें पवित्र करने के लिए जल बनाया और प्रकाश देने के लिए इस्लाम''।

प्रकृति उत्पादन की महत्वता के फलस्वरूप यूनानी औषधि पद्धति इस धर्म की देन है जिसे खुदा ने लोगों की रक्षा करने को ईजाद किया है।

पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं प्रतिद्वन्द्वी नहीं क्योंकि गांधी जी ने भी कहा था–

"Nature has enough for our need,

But not for everybody's greed."

आइए आज इस प्राचीन विचारधारा को नये उत्साह के साथ अंगीकार करें और पर्यावरणीय असन्तुलन के कारण उत्पन्न हुई प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रहने के लिए अपने धर्म व संस्कृति से जुड़ें। इस संकट के सार्थक निदान के लिए हमें सांस्कृतिक विरासत व परम्परा को पुनः सहेजना होगा तभी प्रकृति के प्रकोप से बच सकते हैं अन्यथा नहीं।

लघु कहानी

संजीव मिश्र

(सहायक)

रसायन विज्ञान प्रयोगशाला

बेटी ने आम खाकर गुठली व छिलका आंगन में फेक दिया मैंने देखा एक चीटी आम की तरफ चली आ रही है, आज चीटी भरपेट भोजन करेगी फिर सोचा कहीं ये इतना न खा ले कि पचा न पाए। मगर ये क्या चीटी तो सूंघ कर चली गई। बहुत आश्चर्य हुआ, कोई चीटी मीठा आम छोड़कर कैसे जा सकती है ? अरे !!! ये क्या, अभी मैं ये सब विचारों की उधेड़ बुन में ही था कि मैंने देखा, बहुत सारी चीटियां पंक्तिबद्व छिलके और गुठली की तरफ बढ़ रही थीं।

अब मेरी समझ में आ गया कि वो चीटी सिर्फ सूंघ कर क्यों चली गई थी।

काश.....

ऐसी सोच मनुष्य के मन में भी होती तो दुनिया का कोई इंसान भूखा नहीं होता।

शिक्षा का उद्देश्य

कमल सिंह
M.Sc.(Mathematics)
B.Ped, I.T.Com, C.S.O.

शिक्षा ही मानव को मानवीयता से जीना सिखाती है जिस तरह से हिन्दी भाषा के शुद्विकरण में मुख्य भूमिका व्याकरण की है उसी तरह से मनुष्य की भाषा का शुद्विकरण उसके द्वारा अर्जित शिक्षा की मुख्य भाषा शैली का स्वरूप है। जो निम्न प्रकार है।

''तहजीव से बोलो इज्जत मुफ्त मिलती है।

लगा है बाजार कुदरत का हर चीज मुफ्त मिलती है।।''

मनुष्य की भाषा शैली ऊपर की पंक्तियों में मानव को मृदु वचनों से मनुष्य को सम्मान तो मिलता ही है इसके साथ ईश्वर का भी उसको सहयोग मिलता है इसी तरह शिक्षा व सच्चाई की फसल ऊसर भूमि में भी लहराती है अतः शिक्षा का मानव जीवन की कसौटी में बहुत बड़ा योगदान है।

इसी सन्दर्भ में विद्यार्थियों के लिए शिक्षा एक अमूल्य धन है।

''विद्या रत्न अमूल्य प्रेम से पढ़ लेना है सभी सुखों की चाबी इसे मत खो देना

ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना मात पिता आज्ञा सिर धरना

करना गुरू का मान चरण उनके छू लेना

अपना सादा जीवन रखना मृदु भोजन मृदु भाषण करना

मत फैशन में पड़ जाना, पड़ेगा पछताना

विद्या रत्न अमूल्य प्रेम से पढ़ लेना...

कमल सिंह जी यूँ समझाते जिसने कन्या नहीं पढ़ाई वो नर

पशू समान उसे क्या समझाना विद्या रत्न अमूल्य...''

ऊपर की पंक्तियों में शिक्षक ने अपने मन के भावों को स्पष्ट किया है कि एक लड़के के पढ़ने से केवल एक परिवार ही शिक्षित माना जाता है लेकिन एक लड़की के शिक्षित होने से उसकी योग्यता का लाभ दो परिवारों को होता है और उनसे होने वाली संतान की भी अधिक शिक्षित होने की संभावना बढ़ जाती है।

बिटिया

दीप्ति शर्मा

कक्षा–12 ब

बेटा–बेटी दोनों प्यारे
ऐसा कहा जाता है
फिर बिटिया के आगमन पर
मुँह क्यों लटक जाता है।
बेटे को तो, जो वह माँगे
सब मिल जाता है
पर बेटी की बारी में
क्यों आंचल छोटा पड़ जाता है ?
बेटे के जन्म पर
करते हैं दावत शानदार
पर बिटिया के आने पर
क्यों होते हैं शर्मसार ?
गांधी के चार बेटों का
आज शायद कोई नहीं जानता नाम
पर नेहरू की इकलौती बेटी
से पूरा विश्व था लोहा मानता।।
हे ! मानव तू सोच अगर न होती तेरी माँ
तब तुझे क्या
नसीब हो जाता ये जहाँ।
बेटा प्यार करेगा तुझको
पूरा होने तक बचपन
पर बिटिया तुमको
देगी प्यार पूरे जीवन।
पिता ये चाहे पुत्र हो
ये तो समझ में आता है
पर स्त्री होकर भी बेटी न
चाहो ये कैसा नाता है।

क्रिकेट

शिवम श्रीवास्तव

कक्षा–6 ब

क्रिकेट का चढ़ा जब बुखार
मन में आया एक विचार
क्यों न मैं एक टीम बनाऊँ
पहला ही कप जीत के लाऊँ
मैं बोला कप्तान बनूँगा
बैटिंग पहले मैं ही लूंगा
मेरे हाथ में बैट जो आया
कपिल देव को मजा चखाया
आखिरी गेंद कपिल ने फेंकी
मैंने छक्के की कोशिश की
क्रीज छोड़कर मैने मारा
डर गया कपिल बेचारा
गेंद लगी खिड़की से जाकर
शीशा चूर हुआ टकराकर
लेकर डन्डा मम्मी आई
सबसे छुपकर जान बचाई
पड़ गए मुझ पर डन्डे चार
उतर गया क्रिकेट का बुखार

पुण्य इतना करो कि जिससे पाप न करना पड़े

गीतेश वघेल

कक्षा– 11 ब

कभी–कभी इंसान सोचता है कि मैं पुण्य करूँ। उसको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पुण्य के पीछे पाप तो नहीं है। गरीबों को कम्बल बाँटता है। गरीबों की चमड़ी उधेड़कर रखा तो नहीं। पुण्य बड़ी मुश्किल से लगता है। पाप तो शत–प्रतिशत लगता है। जिसको आप पुण्य समझ रहे हैं कहीं वह पाप तो नहीं है। कोई लंगर खाता है, उसमें ऐसे लोग होते हैं जो कमाकर खा सकते हैं। उनको पता है कि कोई आयेगा लंगर लगायेगा, हम खायेंगे। ऐसा देखा जाता है कि कुछ लोग मजदूरी कर पैसा बना सकते हैं। मगर उनको मुफ्त का मिला तो मेहनत क्यों करनी ? माँगना ठीक नहीं समझा जाता। मगर जिसको माँगने की आदत पड़ जाए वो तरीका आसान लगता है। देखा जाये तो भूख कमाना सिखा देती है। जो इंसान भूखा होगा वह कमाने के बारे में जरूर विचार करेगा। अगर इंसान को पेट न लगा होता तो एक दूसरे को मारता रहता। कोई भी जन्म है। वो पेट की खातिर अता–जाता ही है। सही क्या है। विचार करो। दान देना अच्छा है। उससे भी अच्छा है गंदी कमाई ही न करो। दान किसी को दिया जाता है। लिया किसी और से जाता है। दोनों खाते चलते हैं। बराबर खाता नहीं होता। दो नाम के अलग–अलग खाते हैं। एक में जमा है, एक में नाम है। दान सिर्फ सुपात्र को दिया ही लगता है। इसलिए ध्यान रखो दान बेशक किसी को न दो, पर किसी से ठगी भी नहीं हो। यह परलोक का भोग कहलाता है। लोक परलोक दोनों को ठीक रखो। यही रास्ता दिखाई देता है।

समय का मोल

प्रियाँशी सिंह

कक्षा–7 अ

मिले फूल से फूल तो
गुलदस्ता बन जाता है,
ईंट से ईंट जुड़े तो देखो
सुन्दर घर बन जाता है।

पल–पल छोटा लगता है पर,
इससे युग बन जाता है।
पल–पल का जो मोल समझता
बुद्विमान कहलाता है।

छोटी–छोटी जल की बूँदे,
सागर बन लहराती है,
मिट्टी के कण–कण से ही
यह पृथ्वी बन जाती है।

चुटकले

शिवम श्रीवास्तव

कक्षा–6 ब

❖ एक दोस्त– मतदान करने के लिए 18 साल, और शादी के लिये 21 साल ऐसा क्यों ?
दूसरा दोस्त– क्योंकि सारी जनता जानती है कि बीबी संभालना देश संभालने से ज्यादा मुश्किल है।

❖ पुलिस– तुम्हें कल सुवह 5 बजे फांसी दी जायेगी।
कैदी– हंसने लगा
पुलिस– क्यों हंस रहे हो ?
कैदी– मैं तो सुबह 8 बजे तक सोता हूँ।

❖ एक आदमी हवाई जहाज के लैंड होते ही चिल्लाया बैंगलौर आया। बैंगलौर आया बल्ले बल्ले।
तभी एयर हॉस्टेज– हैलो सर! बे साइलेंट
आदमी– ओके, एंगलोर आया, एंगलोर आया, अल्ले, अल्ले।

❖ भिखारी– साहब एक रूपया दे दो।
साहब– कल आना कल
भिखारी– इस कल–कल के चक्कर में मेरा लाखों रूपया इस मुहल्ले में फंसा हुआ है।

कॉलेज के मधुर क्षण

सीमा साहू
कक्षा–11 अ

कॉलेज के ये मधुर क्षण, फिर न वापस आएँगे।
सोच लो साथ के पढ़ने वालों, हम सब जुदा हो जाएँगे।
भूल सकोगे क्या कभी कॉलेज की यह कहानी।
याद करोगे यह कहानी आयेगी याद पुरानी।
आज तुम हो, आज हम हैं मन्दिर है कॉलेज हमारा।
कहाँ रहोगे तुम, कहाँ रहेंगें हम पर कॉलेज सदा अमर रहेगा।
आज इन गुरूओं से डरते हैं, कल होंगे ये भगवान हमारे।
धुमड़ेगी जब कॉलेज की यादें, करूणा होगी बारम्बार।
ये दिन न वापस आऐंगे, चाहे लाख करो उपाय
याद करोगे बार–बार–जा–जा के अपने गांव में
कॉलेज के ये मधुर क्षण फिर न दुवारा आएँगे।
सोच लो साथ के पढ़ने वालों, हम सब जुदा हो जाएँगे।

रामू की मेहनत का फल

ज्योति वघेल
कक्षा– 11 अ

एक गाँव में एक किसान रहता था उसका नाम रामू था। रामू बहुत गरीब, लेकिन मेहनती किसान था। वह रोज सुवह उठकर मेहनत किया करता। उसके साथी न तो जल्दी उठते और न ही कभी खेतों में जाते। दूसरे किसान अपना काम नौकरों पर छोड़ दिया करते। चूंकि उनके पास नौकर चाकर थे। तो वह रामू का मजाक भी उड़या करते थे। वह रामू को चिड़ाते कि वह धूप में खुद का पसीना वहाता रहता है। रामू दूसरे किसानों की बातों पर ध्यान न देता और खुद जी भरकर मेहनत करता। वहीं दूसरे किसान नौकर के भरोसे थे, इसलिए उनकी फसल भी इससे प्रभावित होने लगी। रामू चूंकि अपनी फसल को खुद देखभाल करता तो उनकी पैदाबार हर साल अच्छी होने लगी। नौकरों के भरोसे रहने वाले किसानों को फसल में आर्थिक नुकसान हुआ और रामू अपनी मेहनत के बल पर एक दिन जमींदार बन गया।

चुटकले

शिवम श्रीवास्तव

कक्षा–6 ब

❖ डॉक्टर– आपके तीन दाँत कैसे टूट गए ?
मरीज– वो पत्नी ने कड़क रोटी बनायी थी।
डॉक्टर– अरे, तो खाने से मना कर देते।
मरीज– डॉक्टर साहब, वही तो किया था।

❖ टीचर– अपने प्रिय मित्र का नाम बताओ अंग्रेजी में लिखकर दिखाओ।
स्टूडेंट ने लिखा– ब्यूटीफुल रेड अंडरवियर
टीचर (देखकर)– यह क्या है ?
स्टूडेंट– मेरे प्रिय मित्र का नाम है सुन्दर लाल चढ्ढा।

❖ संगीत के अध्यापक ने अपने एक छात्र से पूछा–
तुम किस ताल के विषय में अधिक जानते हो ?
छात्र ने तुरन्त उत्तर दिया– सर मैं हड़ताल के विषय में अधिक जानता हूँ।

❖ एक दिन मालिक का कुत्ता मर गया इस बात पर नौकर जोर–जोर से रोने लगा।
मालिक बोले– भई तुम हमारे कुत्ते को बहुत ज्यादा प्यार करते थे ना ?
नौकर– कुछ मत पूँछिये मालिक, शेरू हमेशा झूठी प्लेटें जीभ से चाटकर साफ कर देता था अब मैं बरतन कैसे साफ करूँगा ?

ये दुनिया आनी जानी है

ज्योति
कक्षा– 12 ब

ये दुनिया तो आनी जानी है।

हर एक की अपनी कहानी है।

हर तरफ मजहब का रेला है।

यह संसार सुख दुख का मेला है।

हर शख्स की आँख में पानी है।

ये दुनिया.....

रिश्वत घूंसखोरी का चेला है।

इस भीड़ में ईमान अकेला है।

सच्चाई तो अब बेईमानी है।

झूठ की पूरी कहानी है।

ये दुनिया.....

नेकी ने बुराई को झेला है।

मासूम ने खून से खेला है।

शान्ति की क्रान्ति लानी है।

प्रेम की तान सुनानी है।

चाहत की गंगा बहानी है।

ये दुनिया तो आनी जानी है।

मुश्किल होता है–

दीपशिखा

कक्षा– 12 ब

मुश्किल होता है 95 बच्चों को माँ–बाप सा प्यार देना।

मुश्किल होता है इज्जत का 156 बार उच्चारण दोहराना।

मुश्किल होता है एक छोटी सी कामयाबी पर तालियाँ बजबाना।

मुश्किल होता है एक क्लास का साल–दर–साल पहला प्यार होना।

मुश्किल होता है हर दिन एक सफेद झूठ पर विश्वास की एक्टिंग करना।

मुश्किल होता है टिग्नोमेट्री को आसान बनाना।

मुश्किल होता है हर हफ्ते लास्ट वॉर्निंग देना।

मुश्किल होता है दीक्षान्त समारोह पर अपने आँसुओं को हँसी को छुपाना।

मुश्किल होता है एक टीचर का छात्रों का प्यार होना।

मुश्किल होता है एक अच्छा टीचर होना।

औरत

दीपशिखा

कक्षा– 12 ब

मैं एक माँ–बहन और बेटी हूँ।
पर तभी तक,
जब तक मैं घर में हूँ,
जैसे ही मैं घर की चौखट लांघकर
बाहर निकलती हूँ, तो मुझे
औरत में तब्दील कर दिया जाता है,
और फिर मुझे लगता है,
जैसे मैं एक डरावने–जंगल में खड़ी हूँ,
जहां हिंसक नजरे मेरा पीछा करती हैं
कभी मुझ पर तेजाब फेंका जाता है,
तो कभी दहेज के नाम पर
बलि चढ़ाई जाती हूँ
कभी बसों में, कभी कारों में,
मेरी अस्मत को रौंदा जाता है,
वैसे मैं 'देवी' भी कभी बन जाती हूँ
पर तभी तक
जब तक मैं मंदिर में स्थापित रहती हूँ।
दुनियां में तो मुझे,
औरत का दर्जा दिया जाता है,
और शायद ! यही मेरा गुनाह है ?
तभी तो मुझे,
कभी गर्भ में ही, तो कभी जिंदा ही
जीते–जी मार दिया जाता है,
पर अब तो यह 'औरत'
चंद सवालों के जवाव चाहती है,
जो भोगी है इसने पीड़ा,
उसका हिसाब चाहती है।

मेरा मन संन्यासी है

रिंकी बघेल

कक्षा– 11 अ

रूप – राशि क्या दोगे तुम,
मेरा मन संन्यासी है।
मेरी इन आँखों में हैं
इन्द्र धनुष वाले सतरंग
मेघना फुहारों के बीच
डोलती बदरियों के ढंग
अलग छांव क्या दोगे तुम,
मेरा मन आकाशी है।
सोना और चाँदी है भ्रम
सूर्य से सहेजे हैं हम
अर्थवान शब्द – शब्द से
ईश्वर ने भेजे हैं हम
कनक – थाल क्या दोगे तुम,
मेरा मन अविनाशी है।
संध्या के बल्ब नहीं
भोर के उपासक हैं हम
छद्म से न सीता हरते
रघुवंशी शासक हैं हम
महलों की बात क्या सुनें
मेरा मन वनवासी है।

मास्टर ब्लास्टर सचिन तेन्दुलकर

बबलू मौर्य

कक्षा– 11 ब

जय–जय सचिन क्रिकेट रत्न, कियो विश्व में नाम।

कहते हैं बी. एम. सदा, रहे तुम्हारा नाम।।

1. जय हो सचिन रनों के सागर।
   कीना भारत नाम उजागर।।
   तुम हो वीर क्रिकेट के संगी।
   जमते पहने शर्ट तिरंगी।।

2. तोड़ रिकार्ड न कोई पावे।
   जो पहाड़सा सचिन बनावे।।
   हाथ बैट और बॉल विराज।
   दाढ़ी मूंछ फ्रैंच कट साजै।।

3. कवर ड्राइव प्रिय शॉट तुम्हारा।
   पैडल शॉट अचानक मारा।।
   बॉलर सभी नाम से काँपे।
   सचिन वीर जब सिक्स लगाते।।

4. बॉलिंग में भी झण्डा गाढ़े।
   बड़े बड़ों के विकिट उखाड़े।।
   सन् 98 वे में ऐसे वर्षे
   बॉलर सभी विकिट को तरसें।

5. शहबाग यूवी है तुम्हारे चेला
   खेल रहे हैं, बढ़िया खेला
   सूक्ष्म रूप रख फोर लगाया
   विकट रूप रख सिक्स जमाया।

वर्तमान भारत

स्वेता तोमर

कक्षा– 11 अ

नेताओं का नशा वोट का, जनता का कुछ ध्यान नहीं।
अधिकारी हो गए निकम्मे, करते हैं कुछ काम नहीं।।
मंत्री, राज्यपाल, कलेक्टर, झूठे आश्वासन देते हैं।
देश की सेवा करते – करते खुलकर रिश्वत लेते हैं।।
सुविधा शुल्क लगा दफ्तर में बिना शुल्क कुछ काम नहीं।
अधिकारी हो गए निकम्मे करते हैं कुछ काम नहीं।।
अध्यापक भारत के बिगड़े, जिनसे बच्चे बरबाद हुए।
धन्धे चौपट हुए यहाँ के पूँजीपति आबाद हुए।।
झूठे का है यहाँ जमाना, रोज वकालत करते हैं।
सजा मिले नहीं उनको, जो दिन में हत्या करते हैं।।
सेवा करता जो जनता की, उनका होता काम नहीं।
अधिकारी हो गए.....

रसगुल्ला

प्रियांसी सिंह

कक्षा– 7 अ

एक बार हाथ की उंगलियों में बहस चल पड़ी। अंगूठा कहने लगा कि मैं सब उंगलियों से बड़ा हूँ। उसके बराबर वाली उंगली कहने लगी कि मैं सबसे बड़ी हूँ। इसी तरह बाकी उंगलियों ने भी अपने को श्रेष्ठ कहा। निर्णय न हो सका तो सभी अदालत में गए। न्यायधीश ने अंगूठे से कहा भाई तुम क्यों बड़े हो। अंगूठे ने कहा मैं सबसे अधिक पढ़ा–लिखा हूँ। अनपढ़ लोग मुझसे ही हस्ताक्षर करते हैं। बराबर वाली उंगली ने कहा मैं बताती हूँ कि ईश्वर एक है। बाकी उंगलियों ने भी अपनी विशेषताएं बतायीं सबकी बातें सुनकर न्यायधीश सोच में पड़ गए। उन्होंने प्लेट में एक रसगुल्ला मंगवाया। उन्होंने अंगूठे से कहा रसगुल्ला उठाओ। अंगूठे ने बहुत प्रयास किया किन्तु वह रसगुल्ला न उठा सका। सभी उंगलियों ने बारी–बारी से प्रयास किया परन्तु कोई अकेला रसगुल्ला न उठा सका। न्यायधीश ने पाँचो उंगलियों से कहा कि मिलकर रसगुल्ला उठाओ। सभी ने मिलकर रसगुल्ला उठा लिया। तब न्यायधीश ने कहा कि आपने अकेले कोशिश की तो रसगुल्ला नहीं उठा सके और मिलकर कोशिश की तो रसगुल्ला उठा लिया। इससे पता चलता है कि आपमें से कोई भी उँगली छोटी या बड़ी नहीं है। सभी बराबर हैं। यह भी समझ लें कि एकता से मिल–जुलकर रहेंगे तो कोई भी काम कठिन नहीं होगा। एकता में ही महान शक्ति है।

सीख – एकता से मिलकर रहें।

पीड़ा

निशान्त भारद्वाज

कक्षा– 8 ब

मैं भाव सूची उन भावों की, जो बिके सदा ही बिन तोले
तन्हाई हूँ हर उस खत की, जो पढ़ा गया है बिन खोले
हर आँसू को हर पत्थर तक, पहुँचाने की लाचार हूक
मैं सहज अर्थ उन शब्दों का, जो चुने गये हैं बिन बोले
जो कभी नहीं बरसा खुलकर, हर उस बादल का पानी हूँ
लवकुश की पीर बिना गायी, सीता की राम कहानी हूँ
कि जिनके सपनों के ताजमहल, बनने से पहले टूट गये
जिन हाथों में दो हाथ कभी, आने से पहले छूट गये
धरती पर जिनके खोने और पाने की अजब कहानी है
किस्मत की देवी मान गयीं पर प्रणय देवता रूठ गये
मैं मैली चादर वाले उस कबिरा की अम्रत वाणी हूँ
लवकुश की पीर बिना गायी, सीता की राम कहानी हूँ
कुछ कहते हैं मैं सीखा हूँ, अपने जख्मों को खुद सीकर
कुछ जान गये मैं हँसता हूँ, भीतर–भीतर आँसू पीकर
कुछ कहते हैं मैं हूँ, विरोध से उजयी एक खुद्दार विजय
कुछ कहते हैं मैं रचता हूँ, खुद में जीकर खुद में मरकर
लेकिन मैं हर चतुराई की सोची समझी नादानी हूँ
लवकुश की पीर बिना गायी, सीता की राम कहानी हूँ

अंतरिक्ष परी सुनीता विलियम्स

आयशा मशकूर

तैय्यव राजा

कक्षा– 9 ब

कुछ विशेष बातें सुनीता विलियम्स के सम्बन्ध में यूनाइटेड स्पेस एलायंस के सामने स्थित केप कैनेवरल के एक गोवाई रेस्त्रा के मालिक के बारे में एक दिलचस्प कहानी है– सुनीता विलियम्स के अनुरोध पर दूसरे स्पेस शटल अभियान दल ने 7 दिसम्बर 2006 को उड़ान से पहले 'टेस्ट ऑफ गोवा' में लंच करने का विचार बनाया। सुनीता ने रेस्त्रा के मालिक से तंदूरी चिकन के साथ रोटियां, समोसे, इमली की चटनी और गरम–गरम तरी बनाकर देने के लिए अनुरोध किया, ताकि अंतरिक्ष में भी वह सबका आनन्द ले सके।

अंतरिक्ष में भी भारतीयता का यह रंग अभियान दल के शेष सदस्यों में देखने को मिला। रूसी खेमे में नियमित रात्रिभोज के दौरान साग, पनीर एवं छोले परोसे गए और समोसे उसके बाद आने वाले थे। अमेरिकी राज्य विभाग की एक अधिकारिक वेवसाइट में बातचीत के दौरान सुनीता ने अंतरिक्ष में अपने अनुभवों के बारे में बताते हुए उल्लेख किया था–'चावल, रोटी या रायता के बिना शायद यह कुछ लोगों के लिए ज्यादा गरम रहा होगा। जल्दी ही मुझे समोसे भी मिलने वाले थे।' अपने अतिरिक्त बरतन में सुनीता ने कई भारतीय व्यंजन रखे थे, जिनमें पंजाबी कढ़ी–पकौड़ा और मटर पनीर भी शामिल थे। इन्हें अच्छी तरह डिब्बाबन्द करके रखा गया था, ताकि खराब न हों।

'मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह जरूरी होता है।' अंतरिक्ष केन्द्र के डाइटीशियन पाउलाहॉल ने कहा था। भोजन की विविधता सचमुच जरूरी है। भोजन ऐसा होना चाहिए जो आपको अच्छा लगे। जिसका आनन्द आप ले सकें।

अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष केन्द्र पर व्यायाम एक महत्वपूर्ण दिनचर्या होता था और सूक्ष्म गुरूत्व में हड्डियों एवं मांसपेशियों को लोचशील व सक्रिय बनाए रखने के लिए नियत आहार–विहार भी जरूरी था इसके अलावा पच्चीस मिनट तक बाइक चलाना, बीस मिनट तक दौड़ लगाना और यान के भीतर अनेक बार तैरना भी दिनचर्या का हिस्सा था।

16 दिसम्बर, 2006 को सुनीता और बॉव कर्वियन दोनों आई.एस.एस. की सरहद के बाहर चलने के लिए निकले और 7 घंटे 31 मिनट में उन्होंने आई.एस.एस. के चारों ओर लगे तारों का एक चक्कर पूरा किया। उसके बाद तीन चक्कर लगाए। अंतिम चक्कर 6 घंटे 40 मिनट में पूरा हुआ। सुनीता विलियम्स ने किसी महिला अंतरिक्ष यात्री द्वारा सबसे ज्यादा चलने का कीर्तिमान तोड़कर अपने नाम कर लिया।

अंतरिक्ष में चलना सुनीता का एक अनोखा अनुभव रहा। उन्होंने स्वयं कहा था, वहां चारों ओर 360^{0} के कोण तक सबकुछ आसानी से देखा जा सका था, जो मेरे लिए हैरानी की बात थी। इसके अलावा पृथ्वी, तारे और औरोरा नॉर्दर्न लाइट्स देखना भी स्वयं में अनोखा अनुभव था, नार्दर्नलाइट्स का हरा प्रतिबिम्ब ही पृथ्वी पर आ रहा था। सब कुछ आश्चर्यजनक लग रहा था।

हेम रेडियो के संचालकों को अंतरिक्ष यात्रियों से बात करने करने की अनुमति दी गयी थी। सुनीता ने न्यूयार्क, आस्ट्रेलिया और कैलीफोर्निया तक के लोगों से बात की।

प्रश्न – बाह्य अंतरिक्ष में सबसे अच्छा दृश्य क्या है ?

उत्तर – मेरा ख्याल है कि यहां सबसे अच्छा लगता है पूरे ग्रह (पृथ्वी को देखना, सचमुच बहुत अच्छा अनुभव है यह)

प्रश्न – अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष केन्द्र पर पहुंचने में कितना समय लगता है ?

उत्तर – अंतरिक्ष में पहुंचने में तो लगभग साढ़े आठ मिनट ही लगते हैं लेकिन अंतरिक्ष केन्द्र पर पहुंचने में लगभग दो दिन लग जाते हैं।

कुछ घरेलू नुस्खे

कु० बुशरा

कक्षा – 12 ब

- पत्थर पर घिसी सुपारी को आँखों पर लगाने से आराम मिलता है।
- असली शहद को आंखों पर लगाने से मोतियाबिंद बढ़ना रूक जाता है।
- पपीता कत्था और सुपारी को मिलाकर सेवन करने से शुगर में आराम मिलता है।
- करेला के उबले हुए पानी से शुगर कम होती है।
- मेंथी के बीज के पाउडर को दिन में दो बार (प्रातः–सायं) एक–एक चम्मच सेवन करने से शुगर दूर हो जाती है।
- अंगूर का रस गर्म करके पीने से दमा रोगी को आराम मिलता है।
- रात को सोते समय मुंह में देशी घी लगाने से मुंह में बदबू नहीं आती और पायरिया में आराम मिलता है।
- एक चम्मच शहद तथा एक चम्मच कच्चा दूध मिलाकर चेहरे पर लगाने से सुन्दरता बढ़ती है।
- कच्चे मुहासों को नोचने से ये ठीक होते–होते चेहरे पर दाग छोड़ जाते हैं।
- आंवले के चूर्ण को नीबू के रस में मिलाकर लगाने से बाल काले होते हैं।
- तुलसी के पत्तों को अदरक के साथ समान मात्रा में मिलाकर खाने से जुकाम में आराम मिलता है।
- गाजर के रस में शहद मिलाकर पीने से ब्लडप्रेशर दूर हो जाता है।

LoLFk jgu d pkj fu;e %&

- प्रातः काल टहलने जायें।
- नित्यप्रति मंजन स्नान करें।
- कम भोजन करें।
- सदैव प्रसन्न रहें।

शिक्षा एवं समाज

डॉ रामबरन सिंह

(प्रवक्ता संस्कृत)

शिक्षा व्यक्ति के विकास का आधार स्तम्भ है। शिक्षा के बिना मानव व्यक्तिगत अथवा सामाजिक विकास नहीं कर सकता। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का उसी प्रकार दुरगति से क्रमिक विकास होता है, जिस प्रकार निराई गुड़ाई करने से फसल विकसित होकर समय आने पर उससे किसान को प्रभूत मात्रा में उपज प्राप्त होती है। प्रत्येक माता पिता का उत्तरदायित्व है िकवह अपने बच्चों का अच्छी शिक्षा दिलाकर सुयोग्य नागरिक बनायें। शिक्षित नागरिकों से ही अच्छे समाज व राष्ट्र का निर्माण होता है। जो माता पिता अपने बच्चों के गति उक्त कर्तव्य का निर्वाह नहीं करते हैं वे सच्चे अर्थ में अपनी संतान के शत्रु हैं। ऐसे अभिभावक माता पिता को यदि पशु की संज्ञा दी जाय तो कोई अप्रसंगिक बात न होगी क्योंकि पशुओं को सन्तान के प्रति कोई उत्तरदायित्व बोध नहीं होता है।

हमारे भारतीय मनीषियों ने मानव के जो कर्तव्य निर्धारित किये हैं व्यक्ति यदि अपने उन कर्तव्यों से बचता है या जी चुराता है। वह समाज में न तो सम्मान पा सकता है और न ही किसी का प्रेम पात्र हो सकता है। बल्कि वह सामाजिक दृष्टि से निन्दनीय है।

शिक्षारूपी ज्योति से देश का हर आँगन आलोकित हो इसके लिए हर व्यक्ति को सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। शिक्षित न होने बालों की और शिक्षा न दिलाने बाले माता पिता की विद्वानों ने कठोर शब्दों में निन्दा करते हुए कहा है –

स माता स पिता बैरी से न वालोपाठितः।

न सः शोभन्ते सभामध्ये हंस मध्येवकोयथा।।

रूप यौवन सम्पन्नः विशालकुल सम्भवः।

विद्या विहीनः न शोभन्ते निर्गन्धइव किंशुका।।

जो माता पिता अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिलाते हैं वे माता पिता बैरी हैं उनकी वह विना पढ़ी लिखी सन्तान समाज में उसी प्रकार शोभा नहीं पाती है जिस प्रकार हंसों के बीच बगुला सुशोभित नहीं होता है। व्यक्ति चाहे कितना ही सुन्दर व सम्पन्न कुल में पैदा हुआ हो यदि वह शिक्षित नहीं है तो वह समाज के लिए उसी प्रकार महत्वहीन है जिस प्रकार गन्धहीन पलाश के फूल का कोई महत्व नहीं होता।

शिक्षा व्यक्ति का अलौकिक आभूषण है। इसके द्वारा कुरूप व्यक्ति भी दर्शनीय हो जाता है अधिक क्या कहा जाय अष्टावक्र जैसे कुरूप व्यक्ति ने तत्कालीन समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। शिक्षा व्यक्ति के लिए उस कल्पवृक्ष के समान है जिसके नीचे बैठकर जैसी कल्पना करता है

उसको वह फल तत्काल प्राप्त हो जाता है। उसी प्रकार शिक्षा से व्यक्ति मनोवांछित फल पा सकता है।

शिक्षा तो व्यक्ति के नाना प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति करती है परन्तु वह शिक्षा सर्वश्रेष्ठ है जो लौकिक के साथ पारलौकिक हित करती है। क्योंकि व्यक्ति के जीवन का अन्तिम सोपान मोक्ष प्राप्ति है अतः उक्त अवधारणाओं के निमित्त भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति भी करनी चाहिए। मनुष्य के लिए भौतिकता एवं आध्यात्मिकता दो नेत्रों के समान है जिस प्रकार एक नेत्र के बिना व्यक्ति काना और दोनों नेत्रों के बिना अन्धा होता है। इसी प्रकार व्यक्ति को अपने जीवन में आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास में से किसी एक के न होने पर मानव के जीवन में पूर्णता नहीं आ सकती। क्योंकि समाज में अक्सर देखा जाता है कि जो लोग विपन्न हैं ऐसे लोगों को समाज निम्न समझता है और वे जीवित होते हुए भी मृत प्राय होते हैं। और जो लोग भौतिक उन्नति को महत्व देते हैं परन्तु आध्यात्मिक उन्नति तुच्छ समझते हैं ऐसे लोग सदा सर्वदा कुण्ठा, दुःख, अशान्ति व अवसाद आदि से घिरे रहते हैं।

आधुनिक समय में केवल भौतिक विकास की घुड़दौड़ हो रही है। आध्यात्मिक विकास को लोगों ने नगण्य समझ लिया है, जिसके कारण समाज में भय, अराजकता एवं आतंक व्याप्त है। भाई–भाई व भाई–वहिन आदि के पवित्र रिश्ते भी कलंकित हो गये हैं। अतः मनुष्य को समाज में शान्ति सद्भाव व समरसता आदि के विकास के लिए भौतिक विकास के साथ आध्यात्मिक विकास को भी जीवन में प्रमुखता देनी चाहिए। तभी हम वास्तव में सुखी व समृद्व हो सकते हैं अन्यथा सुख की कल्पना करना आकाश पुष्प के समान है प्राचीन मनीषियों द्वारा उद्धत ''सा विद्या या विमुक्तये'' वाली उक्ति भी उक्त अवधारणा के अनुसार ही चरितार्थ हो सकती है।

हमारी दृष्टि में इसी जीवन की सार्थकता और यही जीवन का सच्चा स्वरूप है।

Lord Krishna

Lord Krishna is an important Hindu God. He was the king of Mathura. When he was a young boy, he studied in Gurukul, where he had a very good friend with a poor Brahmin boy Sudama. Many years passed. He become a young man. Krishna become a king. Sudama remained poor Brahmin one day Sudama's wife said,"We have nothing to at,"we have no good clothes to wear. The children are hungry. Go, ask you friend Krishna for help. "Sudama went to Krishna. He took simple gift of half-boiled rice as a gift for him. After walking for some days he reached the place – Krishna hugged Sudama. Sudama gave the gift of Krishna happily he at. Sudama stayed with Krishna for many days. He did not give him anything. He felt shy. Then Sudama returned home. He was sad. He had got nothing for his wife or children. But when Sudama reached his village. He saw a place instead of his hut. His wife and children were wearing rich clothes Sudama's wife told him that Krishna's men had built.

Poonam Gupta

XI – B

AIDS

The Killer of 20th Century

Full name of AIDS-

Acquired Immuno Deficienc Syudrome

Global status of AIDS-

20Million people are positive for HIV.

25% of them are women.

1.5 Million are neonates and children.

30-50% infant born to HIV positive because mothers are positive.

40% HIV positive are 15-18 months.

5000 infections occure daily.

HIV in India-

First case reported in 1986.

First seropositive case reported in 1986 shift.

National AIDS control organization reported 2095 cases till 95.

Estimated 1 million positive for HIV till 1995.

Rise in seropositivity 2.5/1000-7.7/1000.

Present in all states rural and urban areas.

Predominant transmission in heterosexual.

HIV can not be transmitted by-

Casual person to person contact at home, at work, social and public places.

Not by food, air and water.

Not by insect bites.

Not by coughing, sreezing and spitting.

Not by shaking hands, touching, dry kissing or hugging.

Not inswimming pools, telephone, toilets, sharing cups or clothes.

Transmission of HIV-

Sexual contact with infected partner (accounts for 75% of infections)

Veginal/ Anal

Porental

Blood Barme

Porinatal transmission.

Sneha Shrivastav

XII – B

Try to complete if you can

"They rolled up their sleeves and started the hunt for their father's treasure. They dug and dug. Not being used to manual labour they found the work very tiring. Their backs hurt, their hands were rough and sore and their liken clothes were all lout ruined. But they continued to dig. R……
……...

Kundan Singh

T.G.T. S.I.C.

Neoli, Kasganj

To Avoid 10 Clumsy Things

- ❖ Talk too londly, 'yelling.'
- ❖ To walk with stamped feet.
- ❖ To spell the word wrongly.
- ❖ Grinning (Stupid Smile).
- ❖ Spitting every where.
- ❖ Criticize at every corner.
- ❖ To create sound while eating.
- ❖ Look back again and again while going.
- ❖ Chatting too long.
- ❖ To lick lips by own tongue.

Kundan Singh

T.G.T. S.I.C.

Neoli, Kasganj

Power of Words

Words have far greater Power
Than this world will ever know,
For they can heal the broken hearted
And cause the small and weak to grow.
They give hope to tired and discouraged,
When said with a warm, loving smile,
And they can strengthens the step of the weary.
As they travel that last rugged mile.
Yes words can lift up the spirits
Of those who are bowed with despair
For words can fill them with courage,
Because they show them how much you care.
Gentle words spoken at just the right time
Can soften a cold, hardened heart,
And in the dark times of doubt and of fear,
Strength, joy pease they apart.
So think carefully about each word that you speak
And how somebody may be affected,
For words can also kill and destroy,
If by love they have not been perfected.
So speak only words that encourage
And cause others in God's love to grow?
Yes speak only words of hope and of life
So the power of God's love will show.

- Anonymous
Collected by-
Ram Shanker Virlley

Are Examinations Necessary

Examinations are tests for evaluating a student's knowledge. The present system of education ignores the student's individual skills and intelligence. Parents and teachers judge a student's potential through examinations. The Indian system of education is based on the pattern setup by the British nothing much is taught beyond the syllabus and only examination determines the degree or grade of a student. Varioue commissions, which were setup to improve this system recommended practical training and periodicat tests. Cheating, leaking of question papers and other corrupt practices, that have cropped up in the examination should be checked. The aim of education should be to equip the student to face the tough bottle of life.

Km. Shashi Bala

Corruption in India

Corruption is not a new phenomenon in India. It has been prevalent in society since ancient times. History reveals that it was present even in the mauryan period. Great scholar Kautilya mentions the pressure of forty types of corruption in his contemporary society. It was practiced even in Mughal Saltanat period. When the East India Company took control of the country corruption reach new height. Corruption in India has become so common that people now are averse to thinking of public life with it.

Corruption is not a uniquely India phenomenon. It is a witnessed all over the world in developing as well as developed countries. It has spread its tentacles in every field of life namely business administration politics, officialdom and services. In fact there is hardly any sector which can be characterized for not being infected with the vices of corruption. Corruption is rampant in every segment and every section of society, barring the social status attached to it. Nobody can be considered free from corruption even a high ranking officer.

To root out the evil of corruption from society, we need to make a comprehensive code of conduct for politicians, legislatures, bureaucrats and such code should be strictly enforsed/judiciary should be given more independence and initiatives on issues and speedy trial is to be promoted. Law and order machinery should be allowed to work with out political interference. NGOs and media should come forward to create awareness against corruption in society and educate people to combat this evil only then we would be able to save our system from being collapsed.

Kuber Singh

Class – 12 B

Our sir A.R. Shervani Saheb

Mr. Ahmad Rashid Shervani

- Born : 23-01-1932 at village Bilona, District Aligarh, U.P. S/o Sugar Industrialist Fida Ahmad Shervani, & Sultan Jahan Begum, Nephew of freedom-Fighters Tasadduq Ahmad Khan Shervani & Nisar Ahmad Shervani.

- Education : Jamia Millia Islamia New Delhi, Ewing Christian College, Allahabad University B.U. MA (Alig) in Political Science, 1955.

- Residence : A-51/3, Phase-I DLF City Gurgaon- 122002.

- Managing Bharat Sewa Trust Trustee 12-A, Connaught Place, New Delhi - 110001.
  Chairman : Press Asia International P. Ltd.
  Director : Shervani Fabric P. Ltd.
  President : Shervani Education Society, Etah & Budaun
  Member : Aligarh Muslim University Court (Fifth Term)
  Treasurer : All India Muslim Majlis-e-Mushawarat
  Patron, etc Many Colleges and Schools

- Working Ceaselessly for the promotion of education for Muslims for the last 30 Years.

- Published over 6000 articals/reports/write-ups etc in many journals & newspapers.

- 1954-55 Saifi Burhanuddin Gold Medal as best English Debator in Aligarh University.

- Director Shervani Sugar Syndicate Ltd. Great Eastern commercial corporation Ltd. (Formaly) Current Publication P. Ltd. Maha Laksmi Syndicate P. Ltd.

- Service Company Secretary, Personnel Manager, General Manager (Administration) etc. (Retired) Geep Industrialist Syndicate Ltd. Allahabad (Shervani Industrial Syndicate Ltd.

- 1948-49 Vice President : Allahabad Student Congress
  1951-52 Vice President : Allahabad University Students Union
  1951-52 President : Allahabad Students' Federation
  1952-53 President : Aligarh Students' Ferderation
  1953-54 Seceretary : Aligarh Muslim University
  1954-55 Member Executive : Aligarh Muslim University Students Union
  1954-55 Editor : THE NEWHORIZON English Fortnighty, Aligarh
  1955-57 Deligate : Warsaw Youth Festival 1955, Moscow Youth Festival, 1957
  1957-63 Editor : Dost Urdu Weekly, Aligarh and Delhi
  1969-71 Managing Trustee : SAINIK Hindi Daily, Agra
  1970-71 President : All India Small & Medium Newspaper Federation
  1971 Convenor : All India Confrence of Editor of Urdu News Paper & Journals addressed by Prime Minister Indra Gandhi
  1975-77 Manager : Anglo Arabic Senior Secondary School
  1977-89 Manager : Shafiq Memorial Senior Secondary School
  1977-92 Honorary Secretary : Delhi Education Society, Founded by the Late Dr. Zakir Husain
  1977-82 President : Azad Gandhi Inter College, Kasganj Distt. Etah
  1984-87 Member : Aligarh Muslim University Academic Council
  1989-90 President : AMU Old Boys' Association (Delhi) Regd.

1993-94 Honorary Secretary : DLF Qutab Enclave Residents Welfare Association

2002-06 Member : Nation at commission for minorities

Travelled UK, USA, USSR, Egypt, Afghanistan and other countries in Europe, Asia, Africa.

- Clubs etc. India International Center, Press club of India, India Islamic Cultural Centre New Delhi.

- Acted in : "Roshnion ka Shehr"(Urdu Play by Ahmad Faraaz) in Sapru House, New Delhi, 1986
  : "1947-Live"(By Amir Raza Husain) for Airtel in Randhawa Garden, November 2005
  : "Delhi"(By Amir Raza Husain) in Jawahar Lal Nehru Stadium Ground April, May 2005
  : "Aakhir-e-Shab Ke Ham-Safar" (Play by Ahmad Faraaz) in Sri Ram Auditorium 2006

- Sports : Champion in Bridge, Runner-up in Billiards and chess in Aligarh University 29-01-2007

विद्यालय परिचय

कासगंज जनपद में मथुरा बरेली राजमार्ग पर न्यौली शुगर फैक्ट्री के सामने स्थित शेरवानी इण्टर कॉलेज इस जनपद की प्राचीनतम आदर्श शिक्षण संस्थाओं में से एक है। जिसने समय–समय पर प्रखर प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व निर्माण कर समाज में शिक्षा जगत में गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त किया है।

परम पावनी भागीरथी की पवित्र रज में इस विद्यालय ने 1 जनवरी 1948 को जूनियर हाईस्कूल के रूप में जन्म लिया। नौ वर्ष पश्चात् सन् 1957 ई. में इस विद्यालय को हाईस्कूल कक्षाओं के संचालन की मान्यता प्राप्त हुई फिर सन् 1661 में साहित्यिक वर्ग में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय होने की प्रतिष्ठा इसे मिली और दूसरे ही वर्ष 1962 ई. में इण्टर कक्षाओं में विज्ञान विषय में भी मान्यता प्राप्त हुई। सन् 1964 ई. में विज्ञान वर्ग के अन्तर्गत इण्टर कक्षाओं में जीव विज्ञान विषय में भी मान्यता प्राप्त हुई। 66 वर्ष के सेवाकाल में हर प्रकार मौसम ग्रीष्म, शीत, वर्षा उत्थान व पतन का सामना करते हुए परिपक्वता प्राप्त कर अपनी जीवनी शक्ति का परिचय देते हुए जगत में सेवा भावना युक्त बहुमुखी प्रतिभाओं की उत्पाद शीलता के मानदण्ड स्थापित कर लोकप्रियता ग्रहण करते हुए प्रतिदिन अपनी विकासोन्मुख गतिशीलता का परिचय दे रहा है। जनपद ने विभिन्न स्थानों से ही नहीं समीप दूरस्थ ग्रामीण अंचल से आकर विद्यार्थी यहां शिक्षा ग्रहण करते हैं।

विद्यालय नाना प्रकार के क्रीड़ा उपकरण एवं पाठ्य पुस्तकें, संस्था के साहित्यिक व सांस्कृतिक क्रिया कलापों उत्तम परीक्षा फल, श्रेष्ठ अनुशासन एवं उच्च शैक्षिक स्तर के कारण दिन प्रतिदिन लोकप्रियता की ऊँचाइयों को छू रहा है।

विद्यालय प्रबन्ध समिति विद्यालय को आधुनिकतम सुसज्जित विद्यालय बनाने को निरन्तर प्रयत्नशील है। विद्यालय प्रबन्धक श्री खुर्शीद शेरवानी के कुशल प्रबन्ध निर्देशन में प्रबन्ध समिति सहयोग, आत्मीयता, लगनशीलता से विद्यालय के उत्थान के लिए कटिबद्व है। विद्यालय में लगातार भवन का पुर्ननिर्माण एवं नवनिर्माण जारी है विद्यालय का सौन्दर्यकरण हरितकरण हो रहा है विद्यालय की वाउन्ड्री एवं आवाजाही के सी. सी. मार्ग का निर्माण इस सत्र की योजना में शमिल है। बैठने की व्यवस्था एवं अन्य पठन–पाठन उपभोग का सामान भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

प्रबन्ध समिति प्रधानाचार्य, शिक्षक, लिपिक कर्मचारी छात्र अभिभावक पारिवारिक सेवा सहयोग भावना से संस्था के बहुमुखी विकास एवं प्रगति के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील, कटिबद्व हैं।

अध्यापन हेतु मान्यता प्राप्त संवर्ग एवं विषय

tfu;j d{kkvk ¼6]7]8½ d fy, %&

1. हिन्दी
2. गणित
3. सामाजिक विज्ञान
4. अंग्रेजी
5. सामान्य विज्ञान
6. संस्कृत/उर्दू
7. कृषि/गृ०वि०

gkbLdy d{kkvk ¼9]10½ d fy, %&

1. हिन्दी
2. गणित/गृ०वि०
3. विज्ञान
2. 4. सा० विज्ञान
5. अंग्रेजी/ संस्कृत
6. कला/वाणिज्य

d{kk 11 o 12 ¼b.VjehfM,V½ %&

विद्यालय में साहित्यिक, वैज्ञानिक, वाणिज्य वर्गों में मान्यता प्राप्त है जिनके अन्तर्गत निम्न विषयों की शिक्षा दी जाती है–

lkfgfR;d ox %&

1. हिन्दी साहित्यिक (अनिवार्य)
2. अंग्रेजी/संस्कृत
3. भूगोल
4. नागरिक शास्त्र
5. अर्थशास्त्र

oKkfud ox %&

1. हिन्दी सामान्य
2. भौतिक शास्त्र
3. रसायन शास्त्र
4. गणित/जीव विज्ञान
5. अंग्रेजी

Okf.kT; ox %&

1. हिन्दी सामान्य
2. वहीखाता तथा लेखाशास्त्र
3. व्यापार प्रणाली
4. अधिकोषण
5. अंग्रेजी

विशेष :– कॉलेज में कम्प्यूटर प्रशिक्षण व्यवस्था (कक्षा 6 से 12 तक सभी विद्यार्थियों को प्रदान करने की योजना है।)

डाकघर एवं बैंक :– कॉलेज भवन के पास न्यौली शुगर फैक्ट्री में डाकघर एवं बैंक की व्यवस्था होने से विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियों, अल्प वचत योजनाओं एवं पत्र व्यवहार आदि की सुविधा है।

विद्यालय गणवेश :– समानता, निर्भेदता, एकरूपता, सुन्दरता एवं अनुशासन को ध्यान में रखते हुए विद्यालय का अपना गणवेश है जिसका प्रयोग अनिवार्य है–

जूनियर हेतु :– शासन द्वारा निर्धारित गणवेश

सीनियर छात्रों के लिए :–

सफेद कमीज	खाकी नेकर या पैन्ट
काले जूते, नीले मोजे	नेवी ब्लू स्वेटर (जाड़ों में)

सीनियर छात्राओं के लिए :–

स्काई ब्लू कुर्ता	सफेद सलवार
काले जूते, नीले मोजे	सफेद स्कार्फ
जाड़ों में नेवी ब्लू स्वेटर	

fo|ky; fnup;k¼le;½ %& विद्यालय की दिनचर्या का प्रारम्भ प्रार्थना स्थल पर विद्यालय प्रार्थना से होता है।

छात्रों में नैतिक एवं मानवीय गुणों का विकास करने के लिए प्रार्थना स्थल पर ही नैतिक शिक्षा का आयोजन होता है। जिसमें नैतिक विषयों, मूल्यों पर विद्वान अध्यापकों का भाषण समाचार वाचन समय–समय पर महाविद्यालय या समाज के विद्वानों के भाषणों का आयोजन होता है।

तत्पश्चात् विद्यार्थी कक्षाओं में उपस्थिति लगवाकर समय सारिणी के अनुसार विभिन्न विषयों का अध्ययन करते हैं। 8 घंटों की समय सारिणी में प्रथम 4 घंटों बाद मध्यावकाश होता है। प्रत्येक घंटा 40 मिनट का होता है।

ijh{kk %& प्रत्येक सत्र में अर्द्धवार्षिक परीक्षा माह दिसम्बर में और वार्षिक परीक्षा माह अप्रैल में होती है। कक्षा 10 व 12 की परीक्षायें माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित होती हैं। परीक्षा प्रणाली में सुचार हेतु विद्यार्थियों के संकेत रोल नम्बर एवं वैज्ञानिक पद्धति से परीक्षा ली जाती है। कक्षा 9 की परीक्षा जिला स्तर पर गठित परिषद के निर्देशानुसार सम्पन्न कराई जाती है।

प्रबन्ध कारिणी समिति

1.	श्री सलीम इकवाल शेरवानी	(पूर्व सांसद एवं विदेश मंत्री भारत सरकार) (संरक्षक न्यौली एजूकेशन सोसायटी)
2.	श्री साद शेरवानी	उपाध्यक्ष प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली
3.	श्री खुर्शीद शेरवानी	सांसद प्रतिनिधि प्रबन्धक – शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली
4.	श्री रतन कुमार वर्मा	उपप्रबन्धक – शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली
5.	श्री वी०के० मिश्रा	(कोषाध्यक्ष – प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली)
6.	श्री ताहिर हुसैन	(सदस्य – प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली)
7.	श्री जाहिद हसन	(सदस्य शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली)
8.	श्री तारिक शेरवानी	(सदस्य – प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली)
9.	श्री मशकूर हसन	(प्रधानाचार्य) पदेन सदस्य प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली
10.	डॉ राम बरन यादव	(प्रवक्ता) पदेन सदस्य प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली
11.	श्री देव करन मौर्य	(स.अ.) पदेन सदस्य प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली
12.	श्री ब्रज नन्दन गुप्ता	सदस्य प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली
13.	श्री वी० के० राठौर	सदस्य प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली
14.	श्री असरार अहमद	सदस्य प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली
15.	डॉ शिवओम सक्सेना	सदस्य प्रबन्ध समिति शेरवानी इण्टर कॉलेज, न्योली

विद्यालय परिवार

1. श्री मशकूर हसन	प्रधानाचार्य
2. श्री माजिद खाँ	प्रवक्ता भूगोल
3. श्री नरेन्द्र सिंह	प्रवक्ता भौतिक विज्ञान
4. श्री उम्मीद अली	प्रवक्ता गणित
5. श्री नीरज कुमार यादव	प्रवक्ता हिन्दी
6. श्री मनोज कुमार शर्मा	प्रवक्ता अर्थशास्त्र
7. श्री सुनील कुमार तोमर	प्रवक्ता अंग्रेजी
8. श्री डॉ. राम बरन सिंह	प्रवक्ता संस्कृत
9. श्री स्वतन्त्र पाल सिंह	स०अ० संस्कृत
10. श्री राम शंकर विरले	स०अ० जीव विज्ञान
11. श्री राम सिंह दिनकर	स०अ० हिन्दी
12. श्री नरेन्द्र सिंह यादव	स०अ० अंग्रेजी
13. श्री मिथलेश कुमार	स०अ० सामा० वि०
14. श्री देव करन मौर्य	स०अ० गणित
15. श्री मो० निजामुद्दीन	स०अ० उर्दू
16. श्री श्रवण कुमार	स०अ० वाणिज्य
17. श्री संजीव कुमार शर्मा	स०अ० विज्ञान
18. कु० शशिबाला	स०अ० अंग्रेजी
19. श्री कुन्दन सिंह	स०अ० अंग्रेजी
20. श्री महेश कुमार	स०अ० विज्ञान
21. श्रीमती मोनू यादव	स०अ० गृह विज्ञान
22. श्री राजीव कुमार	स०अ० गणित
23. श्री अभिषेक कुमार	स०अ० चित्रकला
24. श्रीमती कुमकुम माहेश्वरी	अतिथि विशेषज्ञ (सिलाई)
25. श्री सचिन कुमार	कम्प्यूटर अनुदेशक
26. श्री सलीमुद्दीन	अंशकालिक वाणिज्य
27. वसीम खान	––
28. कमल सिंह	––

लिपिक वर्ग

1. श्री शाहिद अली	प्रधान लिपिक
2. श्री पल्लव आचार्य	वरिष्ठ लिपिक
3. श्री विजयेन्द्र कुमार	कनिष्ठ लिपिक

कर्मचारी वर्ग

1. श्री रामवीर सिंह
2. श्री संजीव कुमार
3. श्री मो० सलीम
4. श्री मो० यूनुस सैफी
5. श्री उपदेश कुमार
6. श्री प्रमोद कुमार (प्रथम)
7. श्री अली जमाल खाँ
8. श्री अनमोल कुमार
9. श्री प्रमोद कुमार (द्वितीय)
10. श्री राम रतन
11. श्री शिवम कुमार